चन्दामामा
अगस्त १९७०
75 P

चन्दामामा

अगस्त १९७०

*

विषय - सूची

*

एक प्रति ०-७५ पैसे

वार्षिक चन्दा रु. ९-००

लाइफ़बॉय
है जहाँ
तंदुरुस्ती
है वहाँ
LIFEBUOY
for health
लाइफ़बॉय
मैल में छिपे कीटाणुओं
को धो डालता है
लिंटास- L. 61-77 HI
हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

चन्दामामा
संचालक: चक्रपाणी
भविष्य के बारे में जो लोग नहीं सोचते, वे तात्कालिक रूप से अपने सुख का ख्याल रखते हैं। लेकिन भविष्य का विचार करनेवाले लोग क़िफ़ायती का मूल्य जानकर भावी जीवन में स्थाई रूप से सुख प्राप्त करने के लिए तात्कालिक सुख को त्याग देते हैं। यह बात व्यक्तियों की दृष्टि से ही नहीं बल्कि राज्यों के विषय में भी लागू होती है। 'क़िफ़ायती का रहस्य' कहानी में हमें क़िफ़ायती के सच्चे सूत्र का पता चलता है!
वर्ष : २२ अगस्त १९७० अंक : १२
CHITRA

जातिर्यातु रसातलं, गुणगण स्तत्राप्यधोगच्छतात्,
शीलं शैलतटात्पत, त्वभिजन स्सन्दह्यतां वह्निना,
शौर्ये वैरिणि वज्रमाशु निपत, त्वर्थोस्तुनः केवलं,
येनैकेन विना गुणा स्तृणलव प्रायास्समस्ता इमे ॥ १ ॥

[जाति पाताल में चली जाय, गुणों का पूर्ण रूप से लोप हो जाय, शील का पतन हो जाय, वंश भले ही राख हो जाय, शौर्य विच्छिन्न हो जाय, पर हमें धन प्राप्त हो तो पर्याप्त है। उसके बिना ऊपर बताये सब गुण तृण के बराबर भी नहीं हो सकते।]

यस्यास्ति वित्तं सनरः कुलीनः, सपंडितः सश्रुतवान् गुणज्ञः,
स एव वक्ता, सचदर्शनीयः; सर्वेगुणाः कांचन माश्रयंति ॥ २ ॥

[धनी व्यक्ति ही कुलीन है, पंडित है, शास्त्रवेत्ता है, गुणग्राही, रूपवान, वाक्‌चतुर है, ये सभी गुण स्वर्ण से ही प्राप्त होते हैं।]

दानं, भोगो, नाशः त्रिस्त्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य,
य न्नददाति, नभुंक्ते, तस्या तृतीया गति र्भवति ॥ ३ ॥

[दान, भोग और विनाश ये तीनों धन की तीन अवस्थाएँ हैं। जो धन दान अथवा भोग में लाया नहीं जाता, उसे तीसरी गति (नाश) प्राप्त होती है।]

क़िफ़ायती का रहस्य

पश्चिमी तट पर एक गाँव में गणेश और गंगाधर नामक दो जवान थे। बचपन से ही वे दोनों गहरे दोस्त थे। जब वे दोनों जवान हो अपनी जीविका की खोज करने लगे, तब तक उनके गाँव में भयंकर अकाल पड़ा। इसलिए उन दोनों ने निश्चय किया कि पूर्वी तट बहुत ही समृद्ध है। इसलिए वहाँ जाकर आजीविका का कोई उपाय करे।

"अरे भाई, मनुष्य का पेट भरने के लिए आखिर कितना अन्न चाहिये? थोड़े से चावल और सूखी मछलियाँ खाते हम कई सल जी सकते हैं। इस तरह किफ़ायती से दिन काटते, मेहनत करते हुये हम जो कुछ कमायेंगे, उस में से थोड़ा अंश बचाते जायें तो उस पूँजी से हम कोई व्यापार करके अपनी जिंदगी आराम से बिता सकते हैं।" गंगाधर ने कहा।

"अच्छी बात है, हम क़िफ़ायत से दिन बिताते धन कमायेंगे।" गणेश ने कहा।

दोनों घर से निकल पड़े। चलते-चलते आखिर पूर्वी प्रदेश में पहुँचे। वहाँ पर चारों तरफ़ लहलहाते खेत देख वे दोनों मित्र खुशी से फूले न समाये।

दोनों साथी एक नगर में पहुँचे। वहाँ पर खूब व्यापार चल रहा था। दोनों ने सोचा कि दोनों अलग मुहल्लों में चले जायें। एक दो साल तक अपना आपना काम आप करते अपनी क़िस्मत की जाँच करे जिस से एक का बोझ दूसरे पर न पड़े। यह सोचकर दोनों दो दिशाओं में चले गये।

गणेश मन लगा कर काम करते धन कमाने लगा। गंगाधर के कहे मुताबिक़ चावल और सूखी मछलियाँ खाते क़िफ़ायत के साथ दिन बिताने लगा।

बदरी प्रसाद

मगर गणेश इस तरह बहुत दिन बिता न सका। खासकर खाने के संबंध में उसे तक़लीफ़ मालूम होने लगी। पास में धन के रहते कंजूसी कर पेट को काटना उसे पसंद न आया। इसलिए उसने एक दिन एक मुर्गी खरीदी, पकाकर खूब खाया। इस से उसकी जान में जान आ गयी। वह सोचने लगा कि आराम से खाने के लिए न हो तो कही मेहनत कर धन कमाने से फ़ायदा ही क्या है।

फिर भी उसके दिल में इस बात का दुख होने लगा कि वह क़िफ़ायत करने के नियम का उल्लंघन कर रहा है। इसलिए वह फिर कुछ दिन तक चावल और सूखी मछलियाँ खाने लगा। पर उसे वह भोजन अच्छा न लगा। उसे बार-बार मुर्गी के मांस की याद आने लगी।

आखिर गणेश मुर्गी के लोभ में पड़ गया। उसके पास जो कुछ धन था, उसे स्वादिष्ट भोजन करने में खर्च करने लगा। इस तरह धीरे-धीरे उसका धन खर्च होता गया, उलटे काम करने में उसका शरीर साथ देने से इनकार करने लगा। इसके फलस्वरूप वह इस हालत में पहुँचा कि मामूली चावल और सूखी मछलियों के लिए आवश्यक धन वह कमा न पाया।

इस बीच गंगाधर किफ़ायती करते अच्छी हालत में पहुँचा। वह अपनी कड़ी मेहनत की कमाई को बचाकर धीरे धीरे व्यापार भी करने लगा। उसकी कमाई भी बढ़ गयी। उसने ज़मीन व जायदाद भी बना ली। एक मकान खरीदा, शादी करके आराम से अपने दिन बिताने लगा।

गणेश को मालूम हो गया कि उसी के जैसे खाली हाथ उस शहर में आकर गंगाधर बड़ा अमीर बन गया है और आराम की ज़िंदगी बिता रहा है। इसलिए वह अपने मित्र की मदद पाने के ख्याल से उसके घर गया और उस से बोला कि उसकी क़िस्मत ने साथ न दिया, इसलिए उसे एक जून चावल और सूखी मछलियाँ मिलना भी दूभर हो गया है।

"मैं इसका इंतज़ाम करूँगा कि तुमको भी चावल और सूखी मछलियाँ मिल जाय, पर तुम अपने पैरों पर आप खड़े हो जाओ!" यह कह कर गंगाधर ने गणेश को अपने घर के अहाते में एक छोटी झोंपड़ी बनवायी और रोज़ उसके यहाँ चावल और सूखी मछलियाँ भेजने लगा।

कुछ दिन और बीत गये। एक दिन गंगाधर ने गणेश को बुलाकर समझाया— "रोज़ सूखी मछलियाँ खाने में शायद

तुमको तक़लीफ़ मालूम होता होगा। एक काम करो। मेरे इमली के बगीचे के सब से छोटा पेड़ मैं तुमको दे देता हूँ। उसकी पत्तियाँ लाकर मछलियों में डालकर पकाओ तो स्वादिष्ट रहेगा!"

गणेश अपने दोस्त के साथ इमली के बगीचे में गया। वहाँ के सबसे छोटे पौधे की पत्तियाँ लाकर तरकारी में डाल दी। तरकारी उसे बड़ी स्वादिष्ट लगी। मगर कुछ ही दिनों में उस पौधे की सारी पत्तियाँ खतम हो गयीं।

गणेश ने अपने मित्र के पास जाकर एक और इमली के पेड़ से पत्तियाँ तोड़ने की अनुमति माँगी। गंगाधर ने कहा–

"तुम आज से सबसे बड़े इमली के पेड़ से पत्तियाँ तोड़ लो।"

कुछ और दिन बीत गये। गंगाधर ने गणेश को बुलाकर पूछा–"तुम जिस पेड़ से पत्तियाँ तोड़ते हो वे पत्तियाँ खतम तो नहीं हुईं?"

"अरे भाई, उस पेड़ की पत्तियाँ कैसे खतम होंगी? मैं मुट्ठी भर पत्ती तोड़ता हूँ तो दूसरे दिन तक दो मुट्ठी भर पत्तियाँ उगती जा रही हैं।" गणेश ने कहा।

"मेरे दोस्त! मैंने और तुमने जो काम किया, उसमें यही अंतर है! तुम्हारी कमाई जब बहुत कम थी, तब तुमने सारा खर्च कर डाला। मैंने उसके बढ़ने तक सब्र किया और उस से जितना चाहे उतना अनुभव करता हूँ। तुम्हारी ज़िंदगी ठूंठ बन गयी है। मेरी ज़िंदगी फल-फूल रही है।" गंगाधर ने कहा।

"तुमने मुझे अच्छा सबक़ सिखाया। आज से मैं तुम्हारी कमाई पर निर्भर न रहूँगा। फिर मैं अपने पैरों पर आप खड़े होने का प्रयत्न करूँगा।" यह कह कर गणेश ने अपने दोस्त के बताये मार्ग पर चलने का निश्चय कर लिया।

घबराहट

एक गाँव में सोमनाथ नामक एक पुरोहित था। वह हर बात में घबरा जाता था। एक बार पड़ोसी गाँव में एक विवाह होनेवाला था। पुरोहिताई के लिए सोमनाथ को बुलावा आया। वह घबराहटी आदमी था। इसलिए वह मुर्गों के बाँग देने के पहले उठा। पड़ोसी गाँव के लिए रवाना होते हुए अपनी पत्नी से बोला– "अरी, मैं जा रहा हूँ। दर्वाज़ा बंद कर दो। चोर हैं, खबरदार!"

सोमनाथ की पत्नी उठ बैठी। किवाड़ में कुंड़ी चढ़ाकर फिर लेट गयी।

चोरों ने उनकी बातें सुन लीं। उन्हें उस दिन कहीं कुछ हाथ न लगा था। सोमनाथ चला गया। घर में अब केवल सोमनाथ की पत्नी रह गयी थी। सवेरा होने में अभी एक पहर था। चोरों ने सोचा कि सोमनाथ के घर में सेंध लगाने से भले ही कुछ हाथ न लगे चावल तो मिल जायगा। यह सोचकर चोरों ने सोमनाथ के घर में सेंध लगाया और भीतर पहुँचे। घर के भीतर दिया भी जल न रहा था। घना अंधेरा था। चोरों ने सोचा कि यह तो और अच्छा हुआ!

इतने में सोमनाथ लौट आया, दर्वाज़ा खटखटाकर अपनी पत्नी को पुकारा। पत्नी ने उठकर कुंडी खोल दी।

"अरी, मैं पगड़ी ले जाना भूल गया।" यह कहकर सोमनाथ पगड़ी ले फिर चल पड़ा। सोमनाथ की पत्नी कुंड़ी चढ़ाकर फिर लेट गयी। चोर थोड़ी देर इंतजार करते रहे कि सोमनाथ की पत्नी सो जाय! फिर अंधेरे में वे लोग टटोलने लगे कि चावल की हाँड़ी कहाँ पर है। आखिर पता लगाया। उसके पास एक बड़ा वस्त्र बिछाया। चोरों ने सोचा कि उस वस्त्र में चावल बाँधकर ले जायेंगे।

विश्वनाथ नंदा

इतने में सोमनाथ फिर लौट आया। दर्वाज़ा खटखटाकर पत्नी को पुकारा।

पत्नी ने दर्वाज़ा खोलकर पूछा–"अजी इस बार कौन चीज़ भूल गये हैं?"

"थैली भूल गया हूँ। ज़रा लेते आओ।" सोमनाथ ने कहा।

सोमनाथ की पत्नी चावल की हाँड़ी की बगल में से चली गयी, खूंटे पर लटकनेवाली थैली लाकर अपने पति के हाथ दी। फिर दर्वाज़ा बंद कर लिया। थैली के वास्ते सोमनाथ की पत्नी जब हाँड़ी की ओर गयी तब चोर ज़रा हटकर एक कोने में छुप गये थे। उन्हें यह पता न चला कि सोमनाथ की पत्नी को खूंटे के पास जाते समय वह वस्त्र लग गया और वह उसे ले जाकर ओढ़कर फिर लेट गयी।

फिर थोड़ी देर इंतज़ार करके सोमनाथ की पत्नी को सोने दिया, चोरों ने हाँड़ी में से चावल निकालकर जहाँ वस्त्र बिछाये थे, उस स्थान पर डाल दिया। हाँड़ी लगभग खाली हो गयी थी। गठरी बाँधने के लिए चोरों ने वस्त्र के छोरों को टटोला तो उनका पता न चला। तब उन्हें पता चला कि उन लोगों ने ज़मीन पर ही चावल डाल दिये हैं। वे सोच ही रहे थे कि अब क्या किया जाय कि इतने में घबराहटवाला सोमनाथ लौट आया और तीसरी बार दर्वाज़े पर दस्तक देने लगा। पत्नी ने जाकर किवाड़ खोले और कहा–"अजी, अभी तो सवेरा हो गया है। मैं अब अपनी रसोई का काम शुरू कर सकती हूँ।"

ये बातें सुनकर चोर घबरा गये और सेंध से निकलकर भाग खड़े हुए। उस घबराहट में वे लोग अपनी रुपयों की थैली को भी वहीं छोड़ गये। सोमनाथ इस बार अपने लिए आवश्यक सारी चीज़ें लेकर पड़ोसी गाँव पहुँचा। उसकी घबराहट से इस बार उसका बड़ा फ़ायदा हुआ।
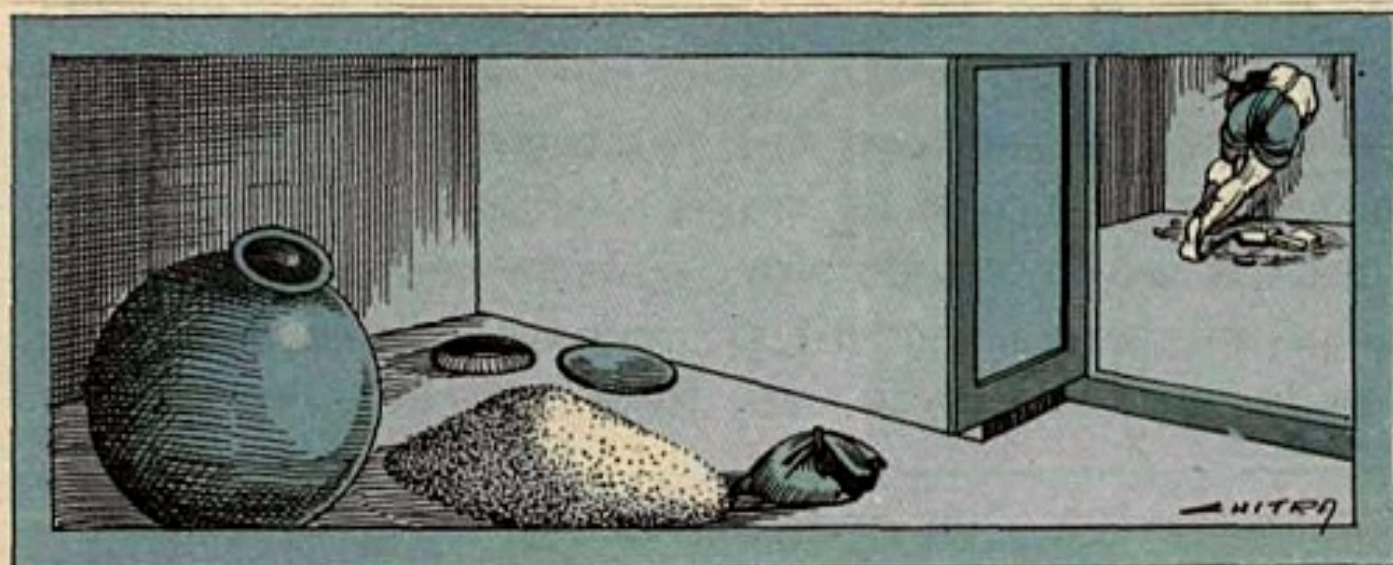
शिथिलालय

[३१]

[वृच्छिक नेता शिखिमुखी के हाथों में हार गया। शिखिमुखी ने उसे क्षमा कर दिया। इसके बाद सब लोग घाटी में उतर पड़े। वहाँ पर सबने मिलकर हाथियों के झुंड को भगा दिया। जाँगला को संदेह हुआ कि पेड़ पर दीखनेवाली आकृति शायद नांगसोम की हो! जांगला जल्दी-जल्दी पेड़ पर चढ़ गया। इसके बाद....]

शिखिमुखी का दल पेड़ के नीचे खड़े हो जांगला के मुंह से समाचार सुनने के लिए व्यग्र हो उठा। जांगला डालों के बीच में से धीरे से चिल्ला उठा–"शिखी साहब, यहाँ पर नांगसोम बेहोश पड़ा है। लेकिन अभी जिंदा है। उसकी साँस चल रही है। एक दो और आदमियों को भेज दो, तो इसे नीचे उतारा जा सकता है।"

जांगला के मुंह से ये बातें पूरी भी न हो पायी थीं कि वृच्छिक जाति के दो युवक पेड़ पर चढ़ बैठे। उन दोनों ने मिलकर नांगसोम को मज़बूत लताओं से बाँध दिया और उसे नीचे उतारा।

शिखिमुखी और विक्रमकेसरी नांगसोम की यह जाँच कर ही रहे थे कि वह जिंदा है कि नहीं, इसी बीच वृच्छिक नेता झाड़ियों में से कोई पत्ती ले आया।
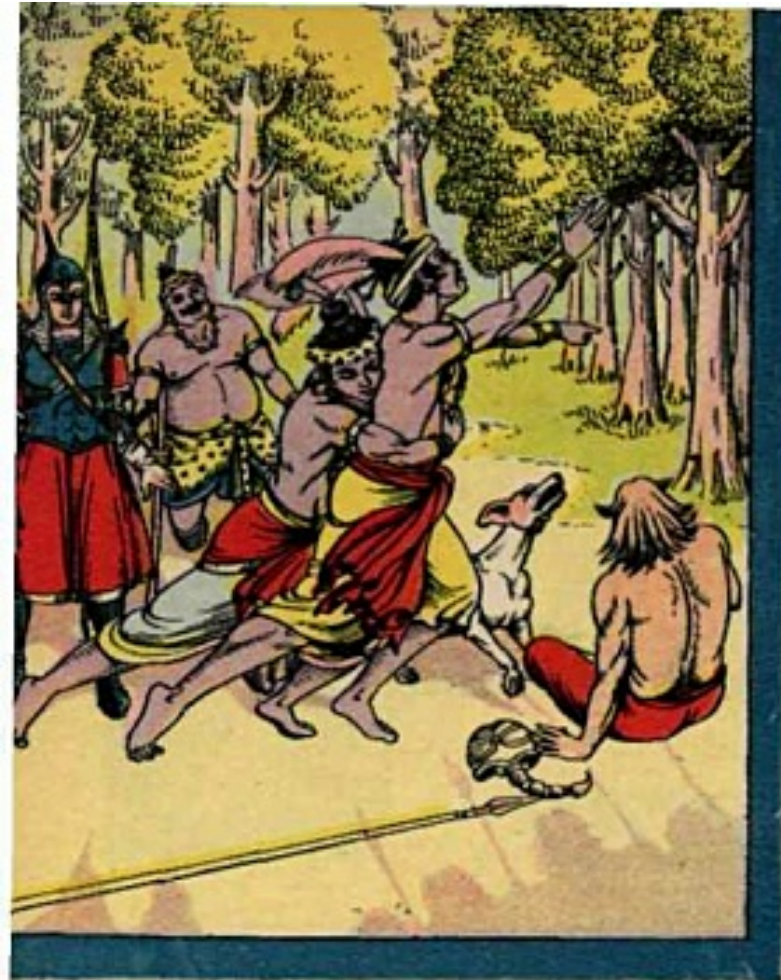
बोला—"विक्रम, लगता है कि अभी तक उन्मत्त कँधे का असर उतरा नहीं है। क्या किया जाय?"

विक्रमकेसरी कुछ कहने ही जा रहा था कि उन्हें "बचाइये! बचाइये!" की चिल्लाहटें सुनाई दीं।

सब ने उस ओर सर उठाकर देखा। लाल कुत्ता ज़ोर से भूँक उठा। शिखिमुखी ने आश्चर्य में आकर पूछा—"क्या यह पिशाच की पुकार है? या शिथिलालय के पुजारी की आवाज़?" इसके बाद तलवार खींचकर वह उस आर्तनाद की दिशा की ओर दौड़ पड़ा।

उसका रस निचोड़ कर नांगसोम की नाक में डाल दिया। दूसरे ही पल में नांगसोम छींक कर उठ बैठा।

"नांगसोम, तुम पहाड़ पर से घाटी के पेड़ों पर गिर गये थे, फिर भी गहरे घाव नहीं हुये, बच रहे, हमें बड़ी खुशी है!" शिखिमुखी ने कहा।

नांगसोम ने पागल की तरह एक बार चारों तरफ़ देखा—"लो, वही शिथिलालय है! वही शिथिलालय है!" चिल्लाते घने वृक्षों की ओर भागने को हुआ।

शिखिमुखी ने उसकी कमर पकड़ कर जबर्दस्ती उसे बिठाया और विक्रम से

बरगद के पेड़ों की छाया से शिखिमुखी रोशनी में आया। आर्तनाद की ओर ध्यान से देखा। इसी समय पुनः चिल्लाहट सुनाई दी—"बचाइये! बचाइये।" इस बार उस कंठध्वनि में पहले की गंभीरता न थी। अंतिम सांस लेने वाली कराहट सी प्रतीत हुई।

"विक्रम! यह कंठध्वनि शिथिलालय के पुजारी की है! इस में ज़रा भी संदेह नहीं है। वह सचमुच किसी खतरे में फँसा हुआ है।" शिखिमुखी ने कहा।

विक्रम जवाब देने ही जा रहा था कि लाल कुत्ता झाड़ियों पर से कूद पड़ा और आगे बढ़कर भूँकने लगा। सब उस के पीछे झाड़ियों से बाहर आये। वहाँ पर उन लोगों ने जो दृश्य देखा, उसने उन लोगों को भय एवं आश्चर्य में डाल दिया।

एक भारी सर्प शिथिलालय के पुजारी को लगभग घुटनों तक निगल चुका था। पुजारी अपने दोनों हाथों में ज़मीन पर की किसी चीज़ को ज़ोर से पकड़े इधर-उधर हिलते चिल्लाने की कोशिश कर रहा था।

"चाहे यह पुजारी जैसे भी दुष्ट क्यों न हो, इसे साँप से बचाने में ही मानवता है।" ये शब्द कहते शिखिमुखी आगे कूद पड़ा। साँप की कमर पर तलवार से वार किया। चोट खाकर साँप डोलने लगा। उसके मुँह से पुजारी बाहर निकला। शिखिमुखी के दल के वृच्छिक जाति के लोग अपने पत्थर के हथियारों से साँप को अंधाधुंध मारने लगे।

शिखिमुखी और विक्रमकेसरी पुजारी के पास पहुँचे। साँप से बाहर निकलने पर भी पुजारी के पैरों से खून टपक रहा था। उसके पैरों की आकृति बिलकुल बदल गयी थी। वे दोनों पैर माँस के पिंड़ों की भांति लाल थे और चमक रहे

हो?" शिखिमुखी ने क्रोध भरे स्वर में पुजारी से पूछा।

शिखिमुखी की क्रोध पूर्ण बातें सुन पुजारी ने सर उठा कर सीधे उसकी आँखों में देखा। इसके बाद क्षणभर रुक कर बोला–"तुम्हारी नज़र में मैं दुष्ट हूँ, दगाखोर हूँ! बस यही है न? शिथिलेश्वरी के वास्ते ही मुझे कुछ तुच्छ मानवों को कष्ट देना पड़ा। उस देवी के सामने इन मानवों की क्या गिनती है! लो, देखो, शिथिलालय के गोपुर का कलश!" इन शब्दों के साथ पुजारी ने दोनों हाथ ऊपर उठाये।

तब तक शिखिमुखी तथा विक्रमकेसरी ने पुजारी के हाथों में बँधी चीज़ को नहीं देखा था। अब उन्हें सूर्य की रोशनी में आँखों को चकाचौंध करते चमकनेवाला कलश दिखाई पड़ा। उनके आश्चर्य की सीमा न थी। उस कलश को देखते ही वृच्छिक जाति के सब लोग साष्टांग दण्डवत करने लगे।

थे। पुजारी मारे पीड़ा के छटपटाते कराह रहा था। उसके हाथ किसी चीज़ को ज़ोर से पकड़े हुये थे।

शिखिमुखी झुक कर उसे उठाने को हुआ तब शिथिलालय का पुजारी कराहते हुये बोला–"शिखी, मुझे यहीं पर मरने दो। मरने के पहले मैंने किसी तरह शिथिलालय का पता लगा लिया है। मेरी मंत्र-शक्ति तथा शिथिलेश्वरी के प्रति मेरी भक्ति बेकार न गयी।"

"तुमने सचमुच शिथिलालय का पता लगा लिया? कहाँ पर है शिथिलालय? मरने के पहले भी तुम क्यों डींग मारते

एक-दो पल तक सब मौन रहें। शिखिमुखी को शक हुआ कि शिथिलालय का पुजारी उस पर कोई जादू तो नहीं चला रहा है! विक्रमकेसरी ने न मालूम क्या सोचा, झट दो क़दम आगे बढ़ा कर,

कलश को दोनों हाथों से पकड़ कर सारी ताक़त लगा उसे ऊपर उठाने की कोशिश करने लगा, पर वह हिला तक नहीं।

इसे देख उस खतरनाक हालत में भी शिथिलालय का पुजारी ठठाकर हँस पड़ा– "छोटे विक्रम, तुम यह समझते हो कि वह कलश एक छोटी थाली की भांति ज़मीन पर औंधे मुंह डाल दी गयी है? मैं असली बात बताता हूँ। सुनो! मैं तुम्हारे दादा को जानता हूँ। उन में जो हठीलापन है, वह तुम में भी है!"

"पुजारी, तुम यह कहते हो कि शिथिलालय के गोपुर का कलश ज़मीन में धँस गया है?" शिखिमुखी ने पूछा।

"कई साल पहले भूकंप के कारण यह मंदिर धँस गया है। यह मंदिर कुछ फुट गहराई तक ज़मीन में धँस गया है। बगल के पहाड़ी पत्थर लुढ़क पड़े जिस से वह ढक गया है। उन पत्थरों को हटाओगे तो शिथिलालय तथा उस में शिथिलेश्वरी देवी तुम्हें दिखाई देगी। शिखी, तुम शबर जातिवालों को उस देवी से क्या मतलब? तुम लोगों को वहां पर प्राप्त होनेवाले सोना ही तो चाहिये न?" पुजारी ने घृणा भरे स्वर में कहा।

शिखिमुखी ने विक्रम की ओर देखा। उन दोनों ने समझ लिया कि पुजारी मरने के पहले भी इम्यु जातिवालों तथा वृच्छिक जातिवालों को उनके विरुद्ध भड़का रहा है। वे सोच ही रहे थे कि पुजारी का क्या करना होगा, नांगसोम एक एक क़दम बढ़ाते उस कलश के पास आ पहुँचा और उसका स्पर्श करके देखा। तुरंत उसे लगा कि उस में कोई नयी शक्ति प्रवेश कर गयी हो!

नांगसोम एक बार गहरा निश्वास लेकर बोला–"विक्रम साहब! अब मैं उन्मत्त कैंथे के असर से मुक्त हो गया हूँ। इस

कलश के अन्दर कोई महिमा है। इस में संदेह नहीं कि इसके नीचे मंदिर है। इन पत्थरों को हटा देंगे।"

"यह काम बड़ा मुश्किल का है। फिर भी करना पड़ेगा। क्यों शिखी, तुम्हारी क्या राय है?" विक्रम ने पूछा।

"चाहे जितना भी मुश्किल का काम क्यों न हो, हमें करना ही होगा। इतनी दूर आकर शिथिलालय में प्रवेश किये बिना हम वापस कैसे लौट सकते हैं? क्या तुम्हारे दादा की आत्मा को शांति नहीं पहुँचानी है? क्या तुम्हारे पिता की आज्ञा का पालन नहीं करना है?" ये शब्द कह कर शिखिमुखी ने धीमी आवाज़ में विक्रम से पूछा—"मगर, इस पुजारी को क्या करे? यह अपनी जाति के लोगों को हम पर उकसा रहा है।"

नांगसोम ने शायद शिखिमुखी के विचार को भाँप लिया। वह हँसते आगे गुप्त रूप में बोला—"इस पुजारी के दोनों पैर चटनी हो गये हैं। वात के प्रकोप से यह अपने आप मर जायगा। उसकी बातों पर ध्यान न दो। मेरा पूर्ण विश्वास है कि यह कलश शिथिलालय से संबंधित है।"

"यदि हम इस पर गिरे पत्थरों के ढेर को उठा उठाकर नहीं फेंकेंगे तो हम इसके नीचे दबे मंदिर को नहीं देख सकते। यह काम एक-दो दिन में पूरा होने का नहीं। हमें इसके समीप में ही अपने निवास बनाना होगा। उसके लिए आवश्यक झोंपड़ियाँ पहले बना लेंगे। तब यह काम शुरू करेंगे।" शिखिमुखी ने कहा।

नांगसोम ने सर हिला कर वृच्छिक जातिवालों की ओर देखा। वृछिक नायक हाथ बाँधे शिखिमुखी के आगे आ खड़ा हुआ। शिखिमुखी ने उसे जरूरी काम बता दिया। उसने शिखिमुखी के मुंह से सारी

बातें सुनकर कहा—"शिखी साहब! यहाँ झोंपड़ी बनाना कोई बड़ी बात नहीं है। इन पत्थरों व चट्टानों को हटाना ही बहुत बड़ा काम है। एक-दो हाथी को हम फालतू बना ले, तो यह काम बड़ा आसान हो जायगा।" फिर शिथिलालय के पुजारी की ओर उंगली से संकेत करके कहा—"यह तो किसी भी हालत में मर जायगा, पर बिना दवा-दारू के मरने देना क्या मुनासिब होगा?"

"हो सके तो कोई इलाज करके उसकी पीड़ा दूर करो। मैं उसकी बात बिलकुल भूल गया हूँ।" शिखिमुखी ने कहा।

वृच्छिक जाति के नेता का आदेश पाकर उसके अनुचर झाड़ि... से पत्तियाँ लाये और पुजारी के पैरों में बांधने लगे। पुजारी ने इनकार करते हुये कहा—"मुझे उस पेड़ की डालों में झूला डालकर उसमें बिठा दो।"

इसके बाद उसने नम्रभाव से फिर कहा—"मैं और चार दिनों से ज़्यादा नहीं जी सकता। इस बीच में तुम लोग शिथिलालय को खोज निकालो। मैं शिथिलेश्वरी के दर्शन कर के निश्चिंत हो प्राण छोड़ूंगा।"

मरनेवाले की इच्छा की पूर्ति करना अपना धर्म है। यह सोचकर शिखिमुखी और विक्रमकेसरी ने उन्हें वैसे ही करने की सलाह दी। उन लोगों ने पुजारी के पैरों में पट्टियाँ बाँध दीं, तब निकट के ए... पेड़ की डाल पर झूला लगाया और उस... पुजारी को बिठाया।

उस दिन शाम तक सबने मिलकर पेड़ों की डालें काट दीं। उन्हें ज़मीन में गाढ़कर उन पर पत्ते बिछाये। वृच्छिक जातिवालों, शिखिमुखी तथा उसके अनुचरों के रहने योग्य छोटी-छोटी झोंपड़ियाँ तैयार कीं। उस रात को उन्हें

ठीक से नींद न आयी। चारों तरफ़ जंगली हाथी चिंघाड़ रहे थे। खूँख्वार जानवरों के गर्जन उनके कान के पर्दों को फाड़ रहे थे। झोंपड़ियों के चारों तरफ़ अलाव जलाये ऊँघते उन लोगों ने सूर्योदय तक समय बिताया।

दूसरे दिन सूर्योदय के साथ सबने लताओं के रस्से तैयार किये। उनसे बाँधकर बड़े बड़े पत्थर और चट्टानों को हटाने का काम शुरू किया। उनके कार्य में विघ्न डालते बीच बीच में जंगली हाथी हमला कर बैठते थे। ऐसी हालत में वे लोग डफली बजा कर उन्हें भगा देते, या पत्थर फेंककर खदेड़ दिया करते थे।

सूर्यास्त होने तक उनके काम में कोई बड़ा विघ्न पैदा न हुआ। शिखिमुखी ने उस दिन का काम समाप्त कर रसोई बनाने की तैयारी करने का अपने अनुचरों को आदेश दिया। ठीक उसी समय हठात उस प्रदेश के चारों तरफ़ के टीलों पर चार हाथी दिखाई पड़े। उन पर बड़े बड़े त्रिशूलधारी चार भयंकर आकृति के व्यक्ति बैठे थे।

शिखिमुखी और विक्रमकेसरी ने अपने अनुचरों को सचेत किया। सब हथियार लेकर लड़ने को तैयार हुये। पर उसी वक़्त हाथियों पर सवार हुये लोगों ने कहा—"जहाँ के लोग वहीं खड़े हो जाइये। हमारे पीछे एक सौ हाथियों पर और अघोरी आ रहे हैं। भागने की कोशिश करोगे तो तुम लोगों को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ेगा।"

शिखिमुखी और विक्रमकेसरी ने यह सोचकर नांगसोम तथा वृश्चिक नायक की ओर देखा कि अब क्या किया जाय? वे दोनों अपने हथियार उठाये त्रिशूलधारियों की ओर चल पड़े। (और है)
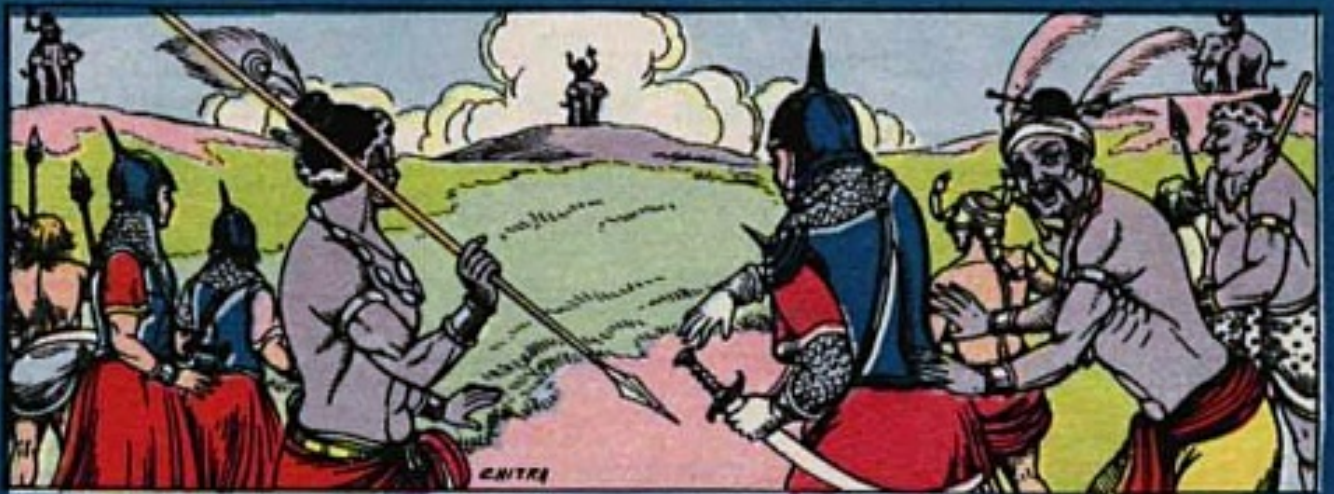
अनोखा स्वभाव

हठी विक्रमादित्य पेड़ के पास लौट आया, पेड़ से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने यों कहा–"मैं नहीं जानता कि तुम इस अर्धरात्रि के समय क्यों श्रम उठाते हो? फिर भी मुझे आश्चर्य नहीं होता। क्योंकि कुछ लोगों के व्यवहार का कोई मतलब नहीं होता। इसके प्रमाण स्वरूप मैं तुम्हें तरुण नामक युवक की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनो।"

बेताल यों कहने लगा: तरुण के कोई निकट रिश्तेदार न थे। उसने बचपन में ही गुरुकुल की शिक्षा समाप्त की और अपने जन्मस्थान विभास के लिए चल पड़ा। उसका उद्देश्य था कि वहाँ पर विवाह करके कोई आजीविका का उपाय ढूंढ ले और अपना स्थाई निवास बना ले।

बेताल कथाएँ

विभास एक बड़ा पुण्य क्षेत्र था। उस गाँव की पूर्वी दिशा में एक ऊँचे पहाड़ पर चामुण्डी का मंदिर था। वहाँ पर रोज़ यात्री आया-जाया करते थे। वहाँ तरुण जैसे शिक्षित व्यक्ति को आसानी से आजीविका की सुविधा हो जाती थी। अलावा इसके वह तरुण के पूर्वजों का निवास स्थान भी था।

तरुण जब गुरुकुल से लौट रहा था तब गाँव के बाहर लोगों की बड़ी भीड़ उसे दिखाई दी। सभी लोग बड़े आश्चर्य के साथ कोई विचित्र बात देख रहे थे। तरुण भी कुतूहल के साथ भीड़ के समीप जा पहुँचा। वहाँ के दृश्य को देख तरुण के मन में बड़ी जुगुप्सा पैदा हुई।

एक जंगली आदमी द्विशाख खूँटे में एक साँप को ज़मीन पर दबाये बीच-बीच में लट्ठा उठाता, साँप के थोड़ी दूर रेंगने पर फिर उसे लाठी से दबाकर पकड़ लेता। वह इस प्रकार बड़ी क्रूरता के साथ साँप से खेल रहा था, प्रेक्षक चारों तरफ़ फैले शोर मचाते हँस रहे थे।

उस जंगली आदमी के इस व्यवहार पर तरुण को बड़ा गुस्सा आया। वह तरुण से दुगुने बलवान था, इसलिए उसने अपने क्रोध को दबाते हुये पूछा–"क्या तुम इस साँप को बेचोगे?"

ज़ंगली ने सर उठाकर तरुण की ओर देखा और पूछा–"यह ब्रह्मचारी कौन है? यह साँप खरीदना चाहता है!"

तरुण ने थोड़े छुट्टे पैसे जंगली की ओर बढ़ाये। "ओह, तुम साँप के शौक़ीन मालूम होते हो! इसे ले जाकर खेलो।" ये शब्द कहते जंगली ने एक हाथ से पैसे ले लिये और दूसरे हाथ से साँप का गला पकड़कर तरुण के हाथों में रख दिया।

यह सोचकर तरुण व्याकुल हो उठा कि साँप के प्रति सहानुभूति दिखाकर वह उन

लोगों की दृष्टि में हास्यास्पद बन गया है और साथ ही अपने पास जो थोड़े पैसे थे, वे भी खर्च हो गये। इसलिए वह साँप को ले वहाँ से आगे बढ़ गया। थोड़ी दूर जाने के बाद एक निर्जन प्रदेश में साँप को छोड़ दिया। उसका रंग गोरा था। तरुण के हाथ से छूटते ही वह साँप कहीं भाग गया।

वह साँप वास्तव में एक नागकन्या था। किसी कारण से नागराज ने उसे दण्ड दिया, जिससे ज़मीन पर उसे कुछ समय के लिए साँप के रूप में रह जाना पड़ा। दण्ड का समय पूरा होते ही वह साँप अपना घर लौट गया। उस नागकन्या के पिता ने तरुण के द्वारा उसके बचाने का कारण जानकर उससे कहा–"बेटी, यदि तुम उस युवक का ऋण चुकाना चाहती हो तो फिर से भूलोक में लौट जाओ।"

"मैं उस युवक की पत्नी बनकर अपना शेष जीवन बिताना चाहती हूँ!" नागकन्या ने अपने पिता से कहा। इस पर नागकन्या के पिता ने प्रसन्न हो कर एक परिचारिका को साथ दे उसे भेज दिया। वे दोनों विभास गाँव में पहुँचीं। तरुण ने नागकन्या को देखते ही उस से प्यार किया। जब उसे मालूम हुआ कि उस कन्या की शादी नहीं हुई है, उसने उस से विवाह करने का प्रस्ताव रखा। नागकन्या ने उस प्रस्ताव को स्वीकार किया।
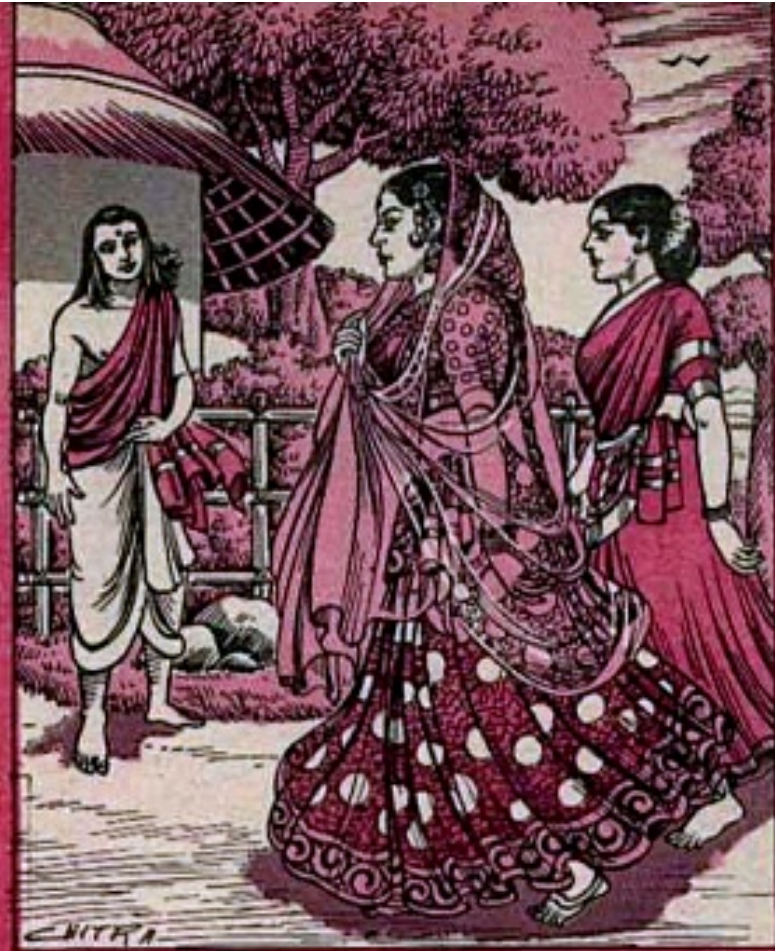
नागकन्या ने अपना नाम रूपवती रखा। रूपवती और तरुण का विवाह हुआ। तरुण को प्रारंभ से ही रूपवती के सौंदर्य पर आश्चर्य था। उसने बहुत समय तक उसके साथ गृहस्थी चलायी, फिर भी उसके आश्चर्य में कोई अंतर न आया।

रूपवती की परिचारिका ही उसकी दासी बनी। तरुण अपनी पत्नी को अपने प्राणों से अधिक प्यार करता था और यह

सोचकर सदा तृप्त रहता था कि पूर्व जन्म में उसने कोई पुण्य किया होगा, इसलिए रूपवती इस जन्म में उसकी पत्नी बनी है।

एक दिन चामुण्डी मंदिर के पुजारी ने रूपवती को देखा। वह एक प्रसिद्ध मांत्रिक था। इसलिए उसने रूपवती को देखते ही पहचान लिया कि वह नागकन्या है। इसलिए एक दिन तरुण को वह अपने साथ बाहर ले गया और कहा–"बेटा, तुमने भूल से एक नागकन्या के साथ विवाह किया है। यह विवाह कैसे हुआ?"

तरुण को लगा कि मानों उसके सर बिजली गिर गयी हो। उसने पूछा– "आप मज़ाक कर रहे हैं या सच बता रहे हैं?"

"बेटा, यह मजाक की बात नहीं है। तुम पढ़े-लिखे हो, फिर भी यह कैसे जान नहीं पाये कि वह मामूली नारी नहीं है?"

तरुण का कलेजा काँप उठा। उसने कई बार अनेक कहानियाँ सुनी थीं कि नागजाति के लोग बिना किसी प्रकार के उद्देश्य के मानवों से संबंध नहीं जोड़ते!

"पुजारी जी, मैं घर लौट नहीं सकता। मुझे भी पहाड़ पर अपने घर रहने दीजिये।" तरुण ने पुजारी से कहा।

"फिलहाल यही उचित होगा, बाद को हम सोचेंगे कि हमें क्या करना होगा।" ये बातें समझाकर पुजारी तरुण को अपने साथ पहाड़ पर ले गया।

अपने पति को घर न लौटते देख रूपवती घबरा गयी। वह अपनी परिचारिका को साथ ले गलियों में घूमते अपने पति की पूछताछ करने लगी। आखिर उसे पता चला कि वह पहाड़ पर गया है। कड़ी धूप पड़ रही थी, पत्थर की चट्टानों पर पैरों में छाले पड़ रहे थे, फिर भी रूपवती पहाड़ पर चढ़ गयी।

पुजारी के घर जाकर बताया कि वह अपने पति से बात करना चाहती है।

पुजारी ने रूपवती से कहा—"तुम नाहक़ यह श्रम क्यों उठाती हो? तुम्हारा पति आइंदा तुम से न मिलेगा। तुम उसकी आशा बिल्कुल छोड़ दो।"

रूपवती आगे कुछ बोल न पायी। आड़ में खड़े तरुण ने अपनी पत्नी को देखा। वह सर झुकाये लौट कर सीढ़ियाँ उतरते तरुण को दिखाई पड़ी।

रूपवती अपनी परिचारिका के साथ पहाड़ उतर गयी। एक पेड़ की छाया में बैठकर फूट-फूट कर रोने लगी। इसी समय उधर किसी को दौड़ते आने की आहट सुनाई दी। दोनों नारियों ने सर उठाकर देखा। तरुण हाँफते उनकी ओर चला आ रहा था। वह दौड़कर रूपवती के पास आया। इस बात की शंका तक किये बिना कि कोई देखे तो अच्छा न होगा, उसने अपनी पत्नी को गले लगाया।

इसके बाद वे तीनों घर लौट चले। उनकी ज़िंदगी सदा की भाँति आनंदपूर्वक बीतने लगी।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"राजन्, तरुण के इस व्यवहार का क्या मतलब है? उसने तो यह जानने पर कि

उसकी पत्नी नाग जाति की है, उसे त्यागने का निश्चय कर लिया था न? जब रूपवती उसकी खोज करते पहाड़ पर आयी, तब भी उसके सामने आने से तरुण ने इनकार किया था, ऐसी हालत में इतने शीघ्र अपने मन को बदल कर उसके पीछे ही रूपवती के पास क्यों दौड़ आया? इस संदेह का समाधान जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा।"

इस पर विक्रमादित्य ने उत्तर दिया– "तरुण यों तो असाधारण व्यक्ति है, फिर भी वह साधारण व्यक्ति जैसे व्यवहार करने का स्वभाव रखता है। जंगली आदमी के हाथों से साँप को बचाने का काम साधारण व्यक्ति नहीं करता। फिर भी उस काम के करने के बाद वह लजा गया। इसी भाँति जब उसे मालूम हुआ कि उसकी पत्नी नाग जाति की है, तब उसका व्यवहार साधारण व्यक्ति जैसे व्यवहार था। परंतु उसकी पत्नी कड़ी दुपहरी में सीढ़ियाँ चढ़कर जब उससे मिलने गयी तब अपनी पत्नी से मिलने से उसके इनकार करने पर भी वह शांत भाव से मौन हो चली गयी। इन घटनाओं ने तरुण की असाधारण प्रकृति को जगाया। यदि उसकी हानि करनेवाली नारी होती तो रूपवती वैसे मौन नहीं लौटती। मीठी-चुपड़ी बातें कर उसे अपने वश में कर लेती। जब तरुण ने यह समझ लिया कि जिस पत्नी को वह त्यागना चाहता है, उसका स्वभाव कैसा उदात्त है, तब तरुण का दिल बदल गया। यदि उस वक़्त उसे यह भी मालूम हो जाय कि उसकी पत्नी पिशाचिनी है तो भी वह उसे नहीं त्यागता।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ ग़ायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

आसमान के खूँटे

एक गाँव में हनुमान प्रसाद नामक एक आदमी था। वह अव्वल दर्जे का बुद्धू था। उसकी शादी-वादी न हुई थी। मजूरी करके अपना पेट पालता था। बुद्धि से वह बेवकूफ़ था, मगर उसका बदन गठीला था। गाँववालों की दृष्टि में वह बड़ा भोला था।

एक दिन रात को हनुमान प्रसाद ने खाना खाकर चाँदनी रात में खाट पर लेटे आसमान की ओर देखा। अचानक उसके दिल में एक भयंकर कल्पना उठी।

"लोग कहते हैं कि इस संसार के लिए भगवान के ज़रिये डाला गया पंडाल ही आसमान है। छोटे से छोटे पंडाल के लिए भी चार खूंटे होते हैं। पर इतने बड़े आसमान के लिए एक भी खूंटा नहीं है। यह आसमान हमारे सर पर गिर जाय तो क्या होगा!"

हनुमान प्रसाद डर के मारे उठ बैठा। यह डर उसे सताने लगा कि आसमान टूट कर नीचे गिर जाय तो उसके प्राण उड़ जायेंगे। किसी से कहना भी चाहे तो सब सो रहे थे। हनुमान प्रसाद दौड़ते हुये गाँव के बाहर पहुँचा और जटाओंवाले बरगद के नीचे बैठ गया। उसका उद्देश्य था कि आसमान टूटकर नीचे गिर जाय तो बरगद की शाखाएँ उसे रोक कर उसकी जान बचायेंगी। वह रात भर पेड़ के नीचे जागते बैठा रहा।

सवेरा हो गया। हनुमान प्रसाद गाँव में लौट आया। जो भी उसके सामने आया, उस से पूछने लगा—"अरे भैया, छोटे पंडाल के चार खूंटे होते हैं तो इतने बड़े आसमान के कितने खूंटे होने चाहिये? एक भी तो नहीं दीखता। क्या वह टूट कर हम पर गिरे तो हम

शशिशर्मा

सब मर न जायें? हम सब उस जगह जावेंगे, जहाँ आसमान न हो!"

"यह तो पागल हो गया है!" कुछ लोग यह कह कर आपस में हँस पड़े। कुछ लोगों ने उसे डांटा, कुछ लोगों ने उसका मजाक़ उड़ाया, पर किसी ने उसकी बातों पर ध्यान न दिया।

"ये ही लोग बावले हैं। जीने की लियाक़त नहीं जानते, इसलिए मेरी बातें सुन नहीं रहे हैं। इन लोगों से मेरा क्या मतलब? मैं ऐसी जगह जाकर आराम से जीऊँगा जहाँ आसमान न हो।" यह सोचकर हनुमान प्रसाद उस गाँव से चल पड़ा।

थोड़ी दूर चलने पर एक जंगल आया। रास्ते में एक दो आदमियों से उसकी भेंट हुई। उसने एक से अपने भय की बात कह दी। वह यह कह कर आगे बढ़ा कि 'अरे, तुम्हारा दिमाग़ तो खराब न हुआ? आसमान के लिए खूंटे किसलिये?"

इस छोटी-सी बात को भी कोई समझ नहीं पा रहा है। इस पर खीझते हुये हनुमान प्रसाद आगे बढ़ा। बड़ी दूर चलने पर भी जंगल समाप्त न हुआ। हनुमान प्रसाद ने सर उठा ऊपर देखा। पेड़ों पर उसे आसमान दिखाई दिया। उसने मन में सोचा कि जहाँ आसमान

नहीं, वहाँ पहुँचना हो तो और चलना होगा।

अंधेरे फैलने तक हनुमान प्रसाद चलता रहा, तब रात बिताने और आसमान के टूटने पर भी बचने के विचार से एक पेड़ के नीचे जा बैठा। उस पेड़ के नीचे एक आदमी आँखें मूँदे बैठा था। हनुमान प्रसाद की आहट पाकर उसने आँखें खोलकर देखा। वह एक योगी था।

हनुमान प्रसाद ने योगी को देखते ही पूछा–"वाह, लगता है कि तुम भी इस डर से पेड़ के नीचे आ बैठे हो कि आसमान के टूटने पर भी जान बचा ले!"

योगी ने समझ लिया कि यह पागल है, उसने मुस्कुराते हुये पूछा–"आसमान का टूटना क्या है?"

"छोटे पंडाल के ही चार खूंटे होते हैं न! इतना बड़ा आसमान कितने दिनों तक आखिर खूंटों के अभाव में गिरे बिना रह सकता है?" हनुमान प्रसाद ने पूछा।

"ओह, तुम्हारा संदेह यह है? बेटा, आसमान के खूंटे क्यों नहीं हैं? मैं यह बात तुमको सबेरे बता दूंगा। अभी सो जाओ!" योगी ने कहा।

योगी की बातों पर यक़ीन करके हनुमान प्रसाद रात को बेफ़िक्र सो गया। सवेरा

हुआ। हनुमान प्रसाद के जागते ही योगी ने कहा—"बेटा, तुमने कहा था कि आसमान के खूंटे नहीं हैं। तुम्हारी शंका के दूर होने का उपाय बताता हूँ। तुम सीधे जाओगे तो एक गाँव पड़ेगा। उस गाँव के प्रत्येक घर में जाकर घरवालों को जी भरकर गालियाँ दो और भीख लेकर लौट आओ।"

हनुमान प्रसाद योगी के कहे अनुसार उस गाँव में पहुँचा। एक एक घर के सामने रुक कर घरवालों को गालियाँ देते भीख मांगने लगा। सब उसको मारने दौड़े, पर किसीने उसे भीख न दी। वह निराश होते हुये एक और घर के सामने पहुँचा। भीख मांगते चिल्ला उठा। भीतर से कोई जवाब न मिला। हनुमान प्रसाद ने गालियाँ देना शुरू किया।

इतने में एक औरत अंजुली में चावल भर कर दौड़ते आयी और बोली—"बेटा, देरी हो गयी है। तुम भूख से तड़प रहे हो, इसलिए गालियाँ न दोगे तो क्या करोगे?" ये शब्द कहते चावल हनुमान प्रसाद की झोली में डाल भीतर चली गयी।

हनुमान प्रसाद के आश्चर्य की सीमा न रही। उसने जंगल में लौट कर योगी को सारी बातें कह सुनायीं।

योगी ने हँसकर कहा—"देखा है न, तुम्हारे गालियाँ देने पर भी उस गृहिणी ने नाराज़ हुये बिना तुमको भीख दी। ऐसे लोग हज़ार या करोड़ में भी एक रहे तो पर्याप्त है। वे ही आसमान के खूंटे हैं। पंडाल के यों तो चार ही खूंटे हैं, पर आसमान के ऐसे खूंटे अनेक हैं। इसलिए आसमान टूटकर नहीं गिरता!"

योगी की बातें हनुमान प्रसाद की समझ में आ गयीं। अपने भय को हटानेवाले उस योगी को उसने साष्टांग प्रणाम किया। इसके बाद उसकी सेवा करते हनुमान प्रसाद जंगल में ही रह गया।

धोखेबाज़

एक गाँव में दो धोखेबाज थे। उनमें एक का नाम वक्रबुद्धि तथा दूसरे का नाम दुर्बुद्धि था। वे दोनों लोगों को तरह-तरह से धोखा देकर अपने दिन चला लेते थे। वे दोनों देशाटन करते एक दिन एक गाँव में पहुँचे। उन्हें खेतों में एक बैल दिखाई दिया। उसके मालिक का कहीं पता न था। उन्होंने बैल को हाँक ले जाकर एक दूसरी जगह उसे बाँध दिया और गाँव की सराय में लौट आये। वक्रबुद्धि सराय में ही ठहरा, पर दुर्बुद्धि गाँव के भीतर चला गया।

इस बीच बैल के मालिक को पता चला कि उसका बैल खो गया है। वह इधर-उधर खोजते सब से बताने लगा। धीरे-धीरे वहाँ पर एक भीड़ लग गयी। इसी समय दुर्बुद्धि उनके पास पहुँचा और बोला—"आप लोग किसी फ़िक्र में पड़े मालूम होते हैं। सराय में मेरे गुरु ज्योतिष के आचार्य ठहरे हैं। उनसे मिलेंगे तो आपकी खोई हुई चीज़ का पता बतायेंगे।"

ये बातें सुनने पर बैल के मालिक की जान में जान आ गयी। वह दुर्बुद्धि तथा अन्य ग्रामवासियों को साथ ले सराय के पास पहुँचा। वक्रबुद्धि ने सारी बातें सुन लीं। अपनी पेटी में से ताड़-पत्र निकाले, कुछ पन्ने उलट-पलट कर देखा। आँखें बंद कर थोड़ी देर तक सोचने का अभिनय किया और बैल के मालिक से कहा—"इस सराय की उत्तरी दिशा में जाओगे तो एक इमली का ऊँचा पेड़ दिखाई देगा। वहाँ बायीं तरफ़ मुड़ोगे तो आम का एक छोटा पेड़ दिखाई पड़ेगा। उसी के नज़दीक तुम्हारा बैल मिलेगा।"

बैल के मालिक के साथ दुर्बुद्धि तथा अन्य ग्रामवासी चल पड़े। वक्रबुद्धि के बताये स्थान पर ही बैल दिखाई दिया।

बर्मा की लोक-कथा

था। वह बड़ा क़ीमती था। ज्योतिषी को उसे गाँव के मुखिये को फिर से दिलाना था।

वक्रबुद्धि पल भर के लिए चकित रह गया। मगर धोखा देने में वह सिद्धहस्त था। इसलिए बोला–"यह समय वर्ज्य का समय है। अब मैं ज्योतिष संबन्धी पुस्तकें नहीं देख सकता। कल सुबह आ जाइयेगा तो चोरी का पता बतला दूँगा।"

"जो आज्ञा! कल सूर्योदय के समय पुनः मैं आपके दर्शन करूँगा।" ये शब्द कहकर मुखिया वहाँ से चला गया।

इसके बाद दोखेबाज़ों ने सलाह-मशविरा किया। दुर्बुद्धि ने कहा–"दोस्त! हमें यहाँ से भाग जाना उचित होगा।"

"अरे, रात को यहाँ से निकलेंगे, अभी तो सब लोग हमें देख लेंगे।" वक्रबुद्धि ने सलाह दी।

इस बीच में मुखिये ने घर लौटकर सब लोगों से बता दिया कि ज्योतिषी ने चोर को पकड़ने का वादा किया है, इसलिए उसका पानदान कल सबेरे तक किसी भी हालत में मिल ही जायगा।

मुखिये के नौकरों में 'प्रारब्ध' नामक एक नौकर था। उसी ने सोने का पानदान

अपने गुरु की दक्षिणा के रूप में दुर्बुद्धि ने बैल के मालिक से दस रुपये वसूल किया।

धोखेबाज़ों की चाल चल निकली। अब वे उस गाँव को छोड़कर दूसरे गाँव के लिए रवाना होने लगे। इसी समय गाँव का मुखिया दौड़ता हुआ आया और बोला–"मैं आप ही के वास्ते आया हूँ। अच्छा हुआ कि आपके निकलने के पहले आ पहुँचा। वरना मेरी क्या हालत हो जाती!" इन शब्दों के साथ उसने अपने आने का कारण बताया।

गाँव के मुखिये का सोने का पानदान खो गया था। किसी ने उसे चुरा लिया

चुराया था। ज्योतिषी की बात सुनते ही उसका कलेजा कांप उठा। उस रात को वह सराय की ओर गया। धोखेबाज़ों के कमरे की खिड़की के बाहर खड़े हो वह भीतर की बातचीत सुनने लगा।

"हमें तो तभी चले जाना चाहिये था। यह क्या, अंधेरे में चोरों की भांति भाग जाना मुझे पसंद नहीं है।" वक्रबुद्धि कह रहा था। 'प्रारब्ध' को यह सोचकर और डर लगा कि वे दोनों उसी के बारे में सोच रहे हैं।

"मुझ पर दोष न लगाओ, हमने थोड़े ही सोचा था कि चोरी का यह भार हम पर आ पड़ेगा! प्रारब्ध है! अहा, यह हमारा प्रारब्ध ही है!" दुर्बुद्धि ने कहा।

यह बात सुनते ही प्रारब्ध का शरीर कांप उठा। वह झट भीतर घुस पड़ा। धोखेबाज़ों के पैर पकड़कर गिड़गिड़ाने लगा—"सरकार, मुझे बचा लीजिये! पानदान मैंने ही चुराया था। मुझे खूब पीटा गया, पर मैंने स्वीकार नहीं किया। मैं आपको बताऊँगा कि पानदान कहाँ छिपा रखा है। आप मेरे प्राण बचाइये।"

"अच्छी बात है, बतला दो।" वक्रबुद्धि ने कहा। प्रारब्ध पानदान छिपाने की जगह बताकर चला गया।

गाँव का मुखिया दूसरे दिन सूर्योदय के समय आ पहुँचा। वक्रबुद्धि ने मुखिये से बताया।

"श्मशान के चौपाल की सीढ़ियों के पास पानदान गाड़कर रखा गया है। जाकर लेते आइये।"

मुखिये ने श्मशान में जाकर चौपाल की सीढ़ियों के पास खोदकर देखा तो उसे पानदान मिल गया। उसने प्रसन्न हो ज्योतिषी को एक सौ रुपये का पुरस्कार दिया और ज्योतिषी तथा उसके शिष्य को अपने घर दावत पर बुलाया।

गाँव के मुखिये के घर धोखेबाज़ दावत उड़ा ही रहे थे कि राजा के एक कर्मचारी ने आकर मुखिये से एक समाचार बताया। वह यों है–तीन दिन पहले राजधानी के बंदरगाह में सात व्यापारी जहाज़ों ने आकर लंगर डाले हैं। उनमें बड़ा क़ीमती माल है। जहाज़ के मालिक ने राजा से एक दाँव लगाया है। वह यह था कि जहाज़ का मालिक राजा को एक लोहे की मुहरबंद पेटी देगा। उसे खोले बिना अगर राजा उसके भीतर की चीज़ का पता एक सप्ताह के अन्दर बता दे तो वह सारे जहाज़ राजा को देगा। यदि राजा बता न पावेगा तो सारा राज्य उसे जहाज़ के मालिक को सौंपना पड़ेगा।

राजा के दरबार में कुछ ज्योतिषी थे। उन पर राजा का पूर्ण विश्वास था। अलावा इसके राजा के मन में उन जहाज़ों को हड़पने का लोभ पैदा हुआ। इसलिए उसने व्यापारी के दाँव को मान लिया। मगर राजा के ज्योतिषियों के मुँह यह समाचार सुनते ही फीके पड़ गये और उन्होंने बताया कि वे लोग पेटी के भीतर की चीज़ का पता बताने में असमर्थ हैं। तीन दिन बीत गये। और

चार दिन के अन्दर राजा दाँव न जीतेगा तो उसे राज्य को अपने हाथों से धोना पड़ेगा। वह डर गया और अपने राज्य के सभी गाँवों के मुखियों के पास खबर भेज दी कि जहाँ भी ज्योतिषी मिले तो उन्हें राजा के पास भेज दे।

गाँव के मुखिये ने वक्रबुद्धि से कहा— "आप जैसे ज्योतिषियों के होते हमारे राजा को डरने की कोई आवश्यकता नहीं आप दोनों मेरे साथ चलिये।"

लाचार होकर दोनों धोखेबाज़ मुखिये के साथ राजा के पास पहुँचे। वहाँ पर उनका बड़ा आदर-सत्कार हुआ। वे आराम से रखे गये। दाँव की अवधि का अंतिम दिन आया। दूसरे दिन सवेरे राजा यह न बता पावे कि लोहे की पेटी में क्या चीज़ है, तो उसे राज्य से वंचित होना पड़ेगा। धोखेबाज़ अगर राजा को न बता पावे तो उनके सर काट दिये जायेंगे!

"हम आज रात को भाग जायेंगे!" दुर्बुद्धि ने कहा।

"अरे भाई, कहाँ तक भागे! राजा तो हमें किसी न किसी तरह पकड़ लेगा! हमें बेइज़्ज़त की मौत मरनी पड़ेगी। इससे अच्छा यह होगा कि समुद्र में कूदकर तैरते जावें तो सब की आँख बचाकर मर सकते हैं। हमें थोड़ा आदर जो मिला है, वह बना रहेगा।" वक्रबुद्धि ने समझाया।
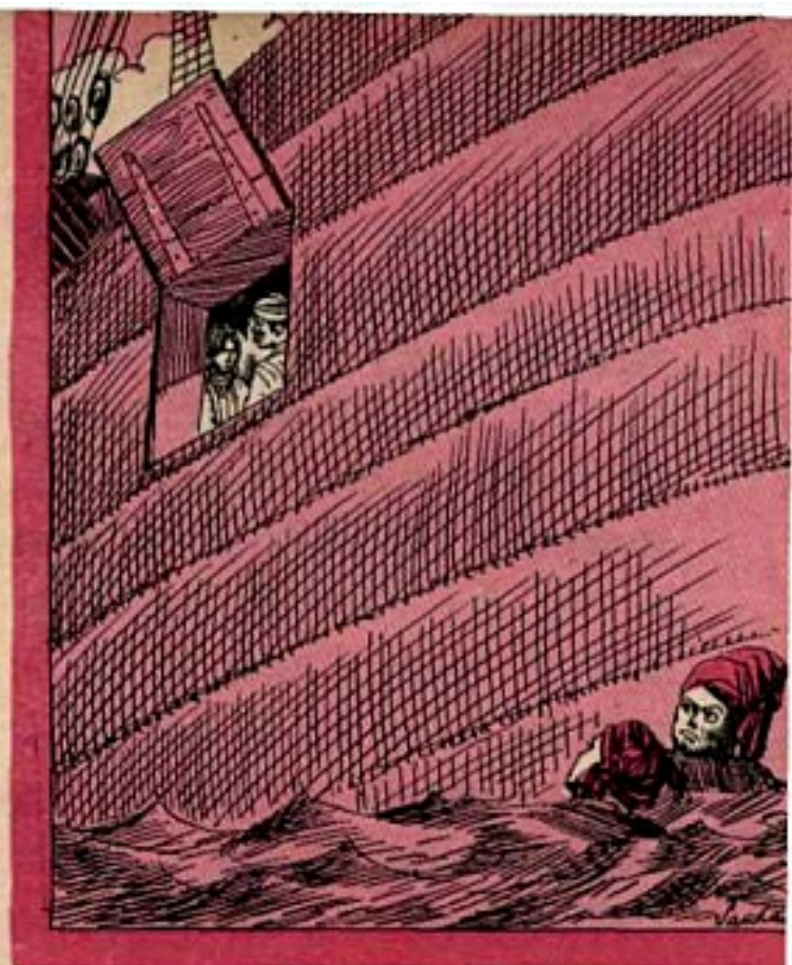
थोड़ी रात बीतने पर वे दोनों समुद्र के किनारे गये। समुद्र में उतर कर तैरते आगे बढ़े। थोड़ी दूर जाने पर उन्हें जहाज़ दिखाई दिये। एक जहाज़ से उन्हें बातचीत सुनाई दी।

"कहो न दादा, उस लोहे की पेटी के अन्दर क्या चीज़ है?" एक छोटी लड़की अपने दादा से पूछ रही थी। "अरी, तुमको इस से क्या मतलब? जाकर सो जाओ!" लड़की का दादा कह रहा था।

"यह बताओगे कि पेटी में क्या है, तभी मैं सो जाऊँगी, नहीं तो नहीं!" लड़की ने हठ किया।

"अरी, सुबह होने पर तो मालूम हो ही जायगा! उस पेटी के अन्दर क्या है, जानती हो? लोहे की पेटी में एक पीतल की पेटी है। पीतल की पेटी में एक चाँदी की पेटी है। चाँदी की पेटी के अन्दर एक सोने की पेटी है। उस सोने की पेटी के भीतर हस का शीशा है। कह दिया न, अब जाकर सो जाओ।" दादा ने लड़की से बताया। वह बड़ा मल्लाह था।

यह बात मालूम होते ही धोखेबाज दोनों चुपचाप तैरते वापस लौटे। सवेरा होते ही उन्होंने राजा को लोहे की पेटी का रहस्य बताया। जहाज के व्यापारी ने अपने सारे जहाज राजा को सौंप दिये।

राजा ने वक्रबुद्धि को अपने दरबारी ज्योतिषियों का प्रधान नियुक्त किया। यह पद धोखेबाजों को पसंद न था। क्योंकि उनका डर था कि कभी न कभी उनके धोखे का पता लग ही जायगा। इसलिए उन दोनों ने एक और चाल चली।

उस दिन शाम को वक्रबुद्धि राजमहल में जाकर राजा से बात कर रहा था। उस समय दुर्बुद्धि रोते हुये वहाँ आ पहुँचा और बोला—"गुरुदेव! क्या बताऊँ, हमारा घर जल गया। हमारे सभी ज्योतिषी ग्रन्थ जलकर राख हो गये।" ये शब्द कहते उसने अपने हाथ दिखाये। उन में छाले पड़ गये थे।

"ओह, क्या बताऊँ! मेरा तबाह ही हो गया! अब मैं ज्योतिष कैसे बताऊँ?" वक्रबुद्धि ने दुःख प्रकट किया।

"आप दोनों चिंता न कीजिये। आप दोनों को मैं अच्छे पद दे देता हूँ।" राजा ने उन्हें समझाया। धोखेबाजों की आखिरी चाल भी चल निकली। वे राजा के दरबार में आराम से अपने शेष दिन बिताने लगे।

धूर्त बुढ़िया

[२]

दिलैला ने इस बीच में सूफ़ी भिखारिन का वेष बदलकर एक परिचारिका का वेश बना लिया। अपनी चातुरी से बगदाद नगर को थर्राने के लिए घर से निकल पड़ी।

वह एक गली के नुक्कड़ को पारकर गयी तो देखती क्या है, एक घर में गाना-बजाना चल रहा है। बत्तियों की रोशनी में वह घर जगमगा रहा है। मकान की डचोढ़ी पर एक औरत एक छोटे लड़के को गोद में लिये खड़ी हुई है। उसके बदन पर सोने-चांदी और ज़रीदार कपड़े, रत्नजड़ित आभूषण और मोतियों की मालाएँ चमक रही हैं।

वह घर बगदाद के व्यापारियों के प्रधान का था। व्यापारी की पत्नी अतिथियों के स्वागत-सत्कार में लगी हुई थी। लड़का शोर मचा रहा था। इसलिए उसने अपने लड़के को दासी के हाथ सौंप कर उसे आदेश दिया था कि अतिथियों के लौटने तक लड़के को खिलाती रहे। ये सारी बातें दिलैला ने पूछताछ करके जान लीं और उस लड़के के आभूषण हड़पने का संकल्प किया।

दिलैला भीड़ को ढकेलती दासी के पास पहुँची और उसके हाथ में एक खोटा सिक्का रखते हुए बोली–"तुम्हारी पुरानी दासी उमाल खयार मालिकिन को सलाम बताने आयी है, ज़रा उनसे बता दो न!"

दासी ने सिक्का लेते हुए पूछा– "मालिकिन दिखाई देंगी तो लड़का हठ कर बैठेगा, मैं उसे लेकर मालिकिन के पास कैसे जाऊँ?"

"मैं लड़के को संभाल लूँगी, तुम हो आओ।" दिलैला ने उसे समझाया।

गुलशन राय

एक करधनी चाहिए। कुल मिलाकर एक हज़ार दीनारों से कम क़ीमती न हो। मैं ये चीज़ें ले जाकर मालिकिन को दिखा देती हूँ, उन्हें पसंद आया तो क़ीमत ला दूँगी। चाहे तो आप तब तक लड़के को यहीं रहने दीजिये।" दिलैला ने कहा।

"वैसे लड़के को यहाँ पर छोड़ जाने की ज़रूरत नहीं, मगर तुम छोड़ जाना चाहती हो, तो तुम्हारी मर्ज़ी!" यह कहकर व्यापारी ने वे सारी चीज़ें दिलैला के हाथ में सौंप दी। उन्हें लेकर दिलैला सीधे अपने घर चली गयी।

उधर व्यापारियों के प्रधान के घर में बड़ा हो-हल्ला मचा हुआ था। उसकी पत्नी ज़मीन पर लोटकर रो रही थी। बच्चे का कहीं पता न था। प्रधान ने लड़के की बड़ी खोज-खबर करायी तो आखिर वह व्यापारी की दूकान में मिला।

"अरे बदमाश, मेरे लड़के को तुमने यहाँ पर छिपा रख दिया? उसके शरीर पर के गहने व कपड़े कहाँ? तुम अव्वल दर्जे के चोर मालूम होते हो?" व्यापारियों के प्रधान ने पूछा।

"मैंने आपके घर एक हज़ार क़ीमती गहने जो भेजे थे, क्या आपने अपनी दासी

दिलैला लड़के को साथ ले एक निर्जन गली में घुस पड़ी। उसके शरीर के क़ीमती आभूषण और कपड़े उतार कर अपनी थैली में छिपा दिये। तब उसे एक हीरे के व्यापारी की दूकान के पास ले गयी।

उस व्यापारी ने व्यापारियों के प्रधान के लड़के को पहचाना और दिलैला से पूछा—"तुम्हारे मालिक क्या चाहते हैं?"

"इस लड़के की बहन के विवाह का संबन्ध पक्का किया जा रहा है। इसलिए एक जोड़ी सोने की चूड़ियाँ, दो जोड़ी पांजेब, एक जोड़ी हीरे के कर्णफूल और

को गहने लाने नहीं भेजा?" गहनों के व्यापारी ने उत्तर दिया ।

एक दूसरे की बात समझने में बड़ी देर लगी । वे परस्पर विचार-विमर्श कर ही रहे थे कि तभी दिलैला से धोखा खाये तीनों लोग वहाँ आ पहुँचे । आखिर पता लगा गया कि सब को एक ही औरत ने दगा किया है । व्यापारियों के प्रधान ने कहा–"उस दुष्टा की खबर लिये बिना मैं नहीं सोऊँगा ।"

"उस बूढ़ी को पकड़ने के लिए मैं भी आपके साथ चलूँगा ।" गहनों के व्यापारी ने कहा । लेकिन सवाल यह था कि कैसे उसे ढूँढ़े? सब ने आखिर सोच-समझकर यह निर्णय किया कि सब अलग-अलग दिशाओं में जाय और दुपहर को हज मसूद नामक नाई की दूकान पर मिले ।

दुपहर के समय गधेवाला युवक नाई की दूकान की ओर आ रहा था, उसे रास्ते में दिलैला दिखाई दी । उसका वेश बदला हुआ था, फिर भी उसने दिलैला को पहचान लिया और पूछा–"अरे बूढ़ी, अब मेरे हाथ से निकलकर कहाँ जाओगी?"
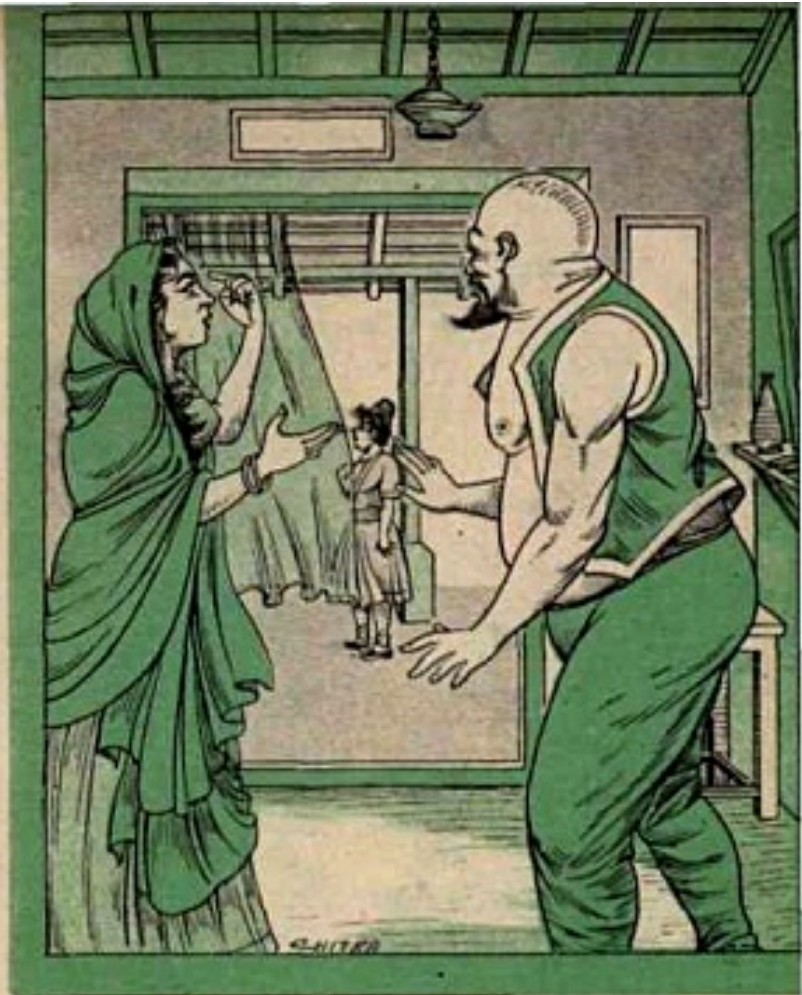
"अरे बेटा, यह तुम क्या कहते हो?" दिलैला ने अपना भोलापन प्रकट करते पूछा ।

"और क्या, पहले मुझे अपना गधा सौंपकर बात करो ।" युवक ने कहा ।

"अरे, चिल्लाते क्यों हो? यह समझते हो कि मैंने तुम्हारे गधे को हड़प लिया है? मैंने तो उसे नाई मसूद के यहाँ रख दिया । मेरे साथ चलो, दिला देती हूँ ।" दिलैला ने कहा ।

दोनों नाई की दूकान पर पहुँचे । युवक को बाहर ठहरा कर दिलैला भीतर चली गयी और मसूद से बोली–"बेटा, अब तुम्हें मेरी रक्षा करनी होगी!"

"क्या बात है, काकीजी! बताओ तो सही?" हज मसूद ने पूछा।

"बाहर जो खड़ा है, वह मेरा बेटा है। वह हाल ही में बीमार पड़ा। समझो कि मौत से लड़ बचा। मगर उसका दिमाग़ खराब हो गया है। बचपन में हमारे घर एक गधा था। वह बार-बार उसी की याद कर चिल्लाता रहता है। वह हमेशा 'गधा' 'गधा' पुकारता रहता है। अब तुम्हीं को उसे ठीक करना होगा।" दिलैला ने गिड़गिड़ाया।

नाई ने दिलैला के हाथ से एक दीनार लेते हुए हिम्मत बंधायी—"काकीजी, यह कौन बड़ी बात है? उसका सर मूंडकर नींब का रस मल दूं, तो तीन जून में ठीक हो जायगा।"

इसके बाद मसूद दूकान के बाहर आया। युवक को भीतर बुलाया।

"मेरा गधा कहाँ?" युवक ने पूछा।

"अरे, तुम्हारा गधा जायगा कहाँ? वह तो मेरे पास ही है। भीतर तो आ जाओ।" नाई ने कहा।

युवक के दुकान के अन्दर आते ही मसूद के नौकरों ने उसे पकड़कर बाँध दिया। मसूद ने उसका सर मूँड दिया। उस पर नींबू का रस मल दिया। युवक जोर-शोर से चिल्लाने लगा।

मसूद युवक के सर नींबू का रस मलकर भीतर पहुँचा तो देखता क्या है, दिलैला तो वहाँ न थी, पर साथ ही दूकान के उस्तरे, क़ैंचियाँ, आईने, तेल, इत्र, कुर्सियाँ, मेज़ आदि सब गायब थीं।

मसूद ने युवक के पास आकर उसका गला दबाते पूछा—"अबे, बताओ, तुम्हारी माँ कहाँ चली गयी?"

"मेरी माँ के मरे कई साल हो गये। तुमने कहा था कि मेरा गधा वापस करोगे, दे दो।" युवक ने अपने सर पर हाथ फेरते

पूछा। इस बीच में बाक़ी लोग भी समय पर नाई की दूकान के पास पहुँचे। सारी बातें सुनने पर उन्हें यह भी मालूम हुआ कि बूढ़ी ने नाई मसूद को भी दगा दिया है। बूढ़ी को पकड़ने के लिए जो दल चल पड़ा, उसमें नाई मसूद और युवक भी शामिल हो गये।

वे सब गलियों में बूढ़ी को ढूँढ़ते चल रहे थे, तब गधेवाले युवक को दिलैला फिर दिखाई दी। उसने उछलकर दिलैला को पकड़ लिया और चिल्ला पड़ा—"बूढ़ी हाथ लग गयी। इसे भागने न दीजिये।"

सब ने मिलकर दिलैला को पकड़ लिया और उसे खालिद के घर ले गये। उन लोगों ने खालिद के नौकरों से पूछा—"हम तुरंत खालिद के दर्शन करना चाहते हैं।"

नौकरों ने बताया कि खालिद साहब सो रहे हैं, इसलिए उनके जागने तक इंतजार करे। नौकरों ने पाँच पुरुषों को बाहर अहाते में एक जगह बिठाया और दिलैला को जनानेवाले एक कमरे में भेज दिया।

दिलैला उस कमरे से होते कई कमरों को पारकर दूसरी मंजिल पर खालिद की

पत्नी के कमरे में घुस पड़ी। उसने खालिद की पत्नी को सलाम कर बताया– "आपके पति ने मेरे गुलामों को बारह सौ दीनारों में खरीदने का सौदा किया है। मैं उनको सौंपने ले आयी हूँ। मुझे मालूम हुआ कि वे सो रहे हैं। उनके जागने में शायद देरी हो जाय!"

"मैं तो यह बात नहीं जानती। लेकिन कभी मुझ से कहा था कि गुलामों को खरीदना है। तुम्हारे गुलाम हैं कहाँ?" खालिद की पत्नी ने पूछा।

"वे सब बाहर हैं। आप खिड़की में से देखियेगा, तो दिखाई देंगे। सब गुलाम देखने में भी अच्छे हैं। बदसूरत नहीं।" दिलैला ने जवाब दिया।

खालिद की औरत ने खिड़की से झांक कर देखा। बाहर बैठे लोग उसे अच्छे ही लगे। इस पर उसने दिलैला से कहा–"उनका मूल्य मैं ही दे देती, लेकिन मेरे पास एक हज़ार दीनार ही हैं।"

"एक हज़ार दीनार ठीक हो जायेंगे जी! मैंने दो सौ दीनार पहले अग्रिम लिया था।" दिलैला ने कहा।

खालिद की पत्नी से दिलैला ने एक हज़ार दीनार लिये। उसे सलाम करके बोली–"आपने मुझे देर तक बिठाये बिना ही दीनार देकर बड़ी मेहर्बानी की। मुझे अपने गुलामों के चेहरे देखने में बड़ा दुख हो रहा है। इसलिए आप मुझे पिछवाड़े से भिजवा दीजियेगा।"

खालिद की पत्नी ने दिलैला को पिछवाड़े की राह से भेज दिया।

खालिद के जागते ही उसकी पत्नी ने कहा–"आपने बड़ा अच्छा सौदा किया!" यह कहते गुलामों की बात समझा दी।

खालिद ने सारी बातें सुनकर आश्चर्य से पूछा–"गुलाम क्या, सौदा कैसा? मैंने तो किसी को भी अग्रिम नहीं दिया है।"

"यह तुम क्या कहते हो जी? मैंने उस बूढ़ी को एक हज़ार दीनार दे दिये हैं। उसने हमें जो गुलाम बेंचे, वे सब नीचे हैं।" खालिद की औरत ने कहा।

खालिद जल्दी जल्दी नीचे उतर पड़ा। उसके इंतज़ार में बैठे दूकानदार, रंगसाज, हीरे के व्यापारी, नाई मसूद तथा गधेवाले युवक को देख अचरज में आकर पूछा– "क्या मेरे खरीदे गुलाम तुम्हीं लोग हो?"

"क्या आप हमारे साथ यही न्याय करते हैं? हमको आप गुलाम समझते हैं? खलीफ़ा के पास चलिये, उन्हीं से पूछ लेंगे।" सबने एक स्वर में कहा।

उसी समय मुस्तफ़ा भी वहाँ आ पहुँचा। तब तक उसे भी यह मालूम हो गया कि बूढ़ी ने ही उसकी पत्नी को धोखा दिया है। उसने खालिद से कहा– "तुम्हारे नेतृत्व में हर कोई बूढ़ी सब घरों में घुसकर भोली औरतों को दगा देती जा रही है! मेरी पत्नी के साथ जो धोखा हुआ, उसका क्या जवाब दोगे?"

खालिद घबरा गया और बोला–"हुजूर, उस बूढ़ी को दण्ड देने का भार मैं अपने ऊपर लेता हूँ। आप सबको जो नुक़सान हुआ है, उसे दिलाने की जिम्मेदारी भी मेरी है।" ये शब्द कहकर वह बाक़ी लोगों की तरफ़ मुड़ा और पूछा–"क्या आप लोगों में से कोई बूढ़ी को पहचान सकता है?"

"हम सब उसे पहचान सकते हैं। यदि हमारे साथ दस भटों को भेज दें तो हम उसे पकड़ लाकर उसे आप को सौंप देंगे।" उन सबने खालिद से कहा।

वे लोग भटों को साथ ले थोड़ी दूर गये ही थे कि दिलैला उनके सामने से आ निकली। उन्हें देख वह भागने लगी। लेकिन सबने उसका पीछा करके उसे पकड़ लिया। उसका हाथ बांध कर खालिद के पास उसे ले गये। (और है)

शादी की शर्त

एक राजकुमारी ने अपनी शादी के लिए एक शर्त रखी। वह यह थी, उससे जो युवक शादी करना चाहता है, वह राजकुमारी के प्रश्नों का जवाब दे और अपने प्रश्नों से उसे हरा दे। राजकुमारी बड़ी सुंदर थी, इसलिए उससे विवाह करने के विचार से चार-पाँच राजकुमार आये और राजकुमारी के प्रश्नों का उत्तर न दे सकने की हालत में हार गये।

आख़िर महेन्द्र नामक एक राजकुमार आया। राजकुमारी के प्रश्न और महेन्द्र के जवाब यों थे: "सभी प्राणियों का मित्र कौन है?" राजकुमारी का प्रश्न था।

"सूर्य" महेन्द्र का उत्तर था।

"अपनी संतान की रक्षा करते उसका भक्षण करनेवाली माता कौन है?" "भूमाता"

"आधे काले और आधे सफ़ेद पत्तोंवाला पेड़ क्या है?" "साल, उसके पत्ते दिन हैं।"

अब प्रश्न पूछने की बारी महेन्द्र की थी। "पुरुषों के लिए गर्व की वस्तु क्या है?" महेन्द्र ने पूछा। राजकुमारी अन्दर चली गयी और लौटकर बोली–"अपने पुत्रों से पराजित होना।"

"नारी के लिए गर्व का कारण क्या है?" महेन्द्र ने फिर पूछा। राजकुमारी इस बार भी घर के भीतर चली गयी और लौटकर बोली–"अपने पति से पराजित होना।"

"तुम किससे मेरे प्रश्नों का उत्तर जानकर जवाब दे रही हो?" महेन्द्र ने पूछा। राजकुमारी ने बताया कि सभी उत्तर उसकी नानी बता रही है।

"अच्छा, नानी से यह पूछकर बता दो कि तुम मुझ से हार गयी, इसलिए मेरे साथ विवाह करोगी कि नहीं?" महेन्द्र ने फिर पूछा।

इस बार नानी स्वयं बाहर आयी और बोली–"तुम जरूर शादी करोगे, बेटा! अपने से पराजित नारी के साथ कोई भी पुरुष विवाह करेगा ही।"

फ़ौलादी क़िला

एक राजा के एक ही लड़का था। वह शादी के योग्य हो चुका था। फिर भी वह अपनी शादी के बारे में बिलकुल सोचता न था। इस पर राजा ने उससे पूछा–"बेटा, तुम विवाह के योग्य हो गये हो, फिर भी शादी वे बारे में क्यों नहीं सोचते?"

"विवाह करने योग्य कन्या कोई भी मेरी दृष्टि में न पड़ी, पिताजी!" राजकुमार ने जवाब दिया।

"तब तो मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। यह चाभी लेते जाओ, राजमहल की मंजिल पर एक कमरा है। उसे खोल कर देखो। शायद तुम्हारी पत्नी बनने योग्य कन्या वहाँ पर तुम्हें मिल जाय।"

राजकुमार ऊपरी मंजिल पर चला गया। उस कमरे को खोल कर भीतर क़दम रखा जिसे आज तक किसीने न खोला था। वह एक गोल कमरा था। उस कमरे की दीवारों पर अनेक राजकुमारियों के चित्र लटकाये गये थे। उन चित्रों को एक एक करके देखते राजकुमार ने कमरे की प्रदक्षिणा की। वे सब कन्याएँ एक से बढ़ कर एक सुंदर थीं। राजकुमार ने सोचा कि उन सब तस्वीरों को फिर एक बार देख कर निर्णय करे। इसी समय राजकुमार की दृष्टि एक तस्वीर पर पड़ी जिस पर वस्त्र ढका था। उसने उस वस्त्र को हटाया। चित्र की सुंदरी को देख मूर्तिवत् खड़ा रह गया। वह कन्या अपूर्व सुंदरी थी। उसीके साथ विवाह करने का राजकुमार ने निश्चय किया।

राजकुमार नीचे उतर आया। अपना निर्णय राजा को सुनाया। राजा ने खीझ कर कहा–"तुमने वस्त्र से ढके चित्र को क्यों देखा? वह देखने योग्य चित्र होता

रविकांत दुबे
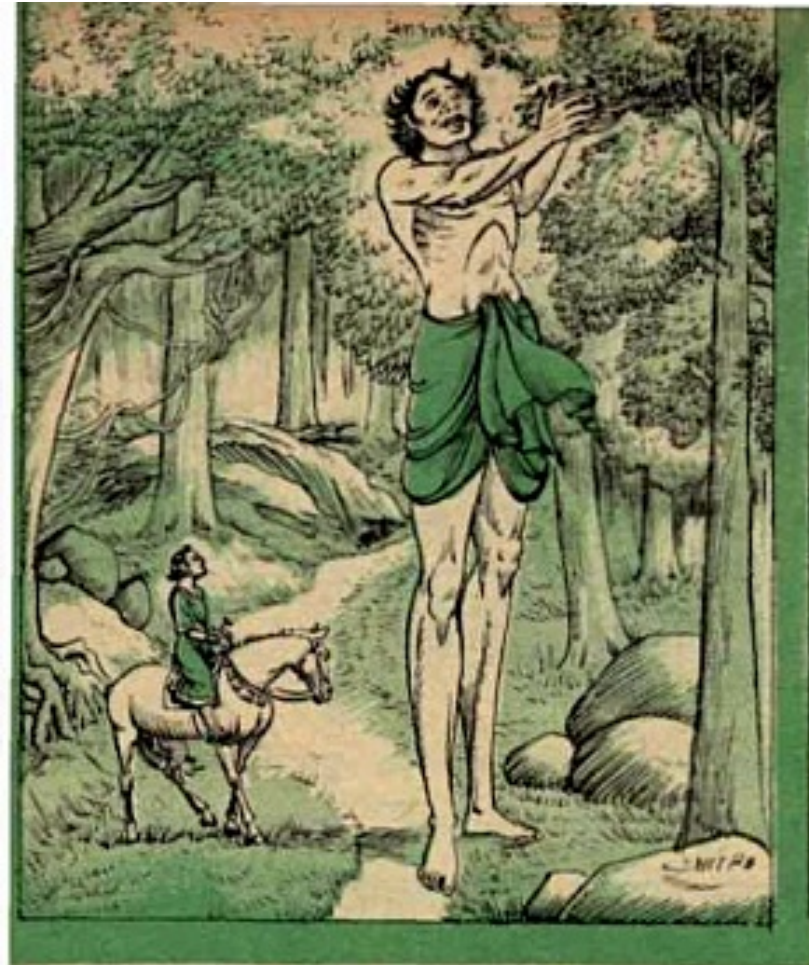
तो उस पर वस्त्र क्यों ढकते? वह एक राजकुमारी ज़रूर है, पर एक दुष्ट मांत्रिक ने उसे उठा ले जाकर एक फ़ौलादी क़िले में बन्दी बनाया है। उसे मुक्त कराने के लिए कई लोग गये, पर एक भी लौट न आया। यदि तुम उसी राजकुमारी से विवाह करना चाहते हो, तो रवाना हो जाओ।"

दूसरे ही दिन राजकुमार अपने घोड़े पर सवार हो अकेले ही चल पड़ा। जल्द ही वह एक जंगल में पहुँचा। कई दिन यात्रा करने पर भी जंगल के खतम होने के लक्षण नहीं दिखाई दे रहे थे। इसी समय एक लंबे आदमी से राजकुमार की मुलाक़ात हुई। उसने राजकुमार से पूछा—"मुझे अपना नौकर बना लो।"

राजकुमार ने सोचा कि उसके एक साथी का होना ज़रूरी है। इसलिए उससे पूछा—"तुम क्या काम कर सकते हो?"

"मेरा नाम "लंबा" है। मैं चाहे जितना भी ऊँचा बढ़ सकता हूँ। चाहे तो देख लो।" यह कहते वह 'लंबा' आदमी देखते-देखते पास के पेड़ के बराबर ऊँचा हो गया और पेड़ की ऊँची डालों में स्थित चिड़िये के घोंसले को अण्डों सहित अपने हाथ में ले राजकुमार को दिखाया।

"बड़ी अच्छी बात है। इस जंगल को पार करने का उपाय बता दे तो तुम को योग्य समझूंगा।" राजकुमार ने कहा।

'लंबा' आदमी सब पेड़ों से ऊँचा हो गया। चारों तरफ़ नज़र डाल कर बोला—"हम दक्षिणी दिशा में जायेंगे तो जल्द जंगल को पार कर सकते हैं।"

उसके कहे मुताबिक़ दक्षिणी दिशा में चल कर वे दोनों एक मैदान में पहुँचे। दूर पर उन्हें एक आदमी दिखाई पड़ा।

"वह आदमी मेरा परिचित है। उसे भी तुम नौकरी दोगे तो वह हमारे काम का होगा।" 'लंबा' ने समझाया।

"अच्छी बात है। तब तो उसे बुलाओ।" राजकुमार ने कहा।

"इससे अच्छा यह होगा कि मैं उसे हमारे पास ले आऊँ।" 'लंबा' आदमी लंबा हो गया। दो-चार लंबे क़दम बढ़ा कर उसके पास पहुँचा और पल-भर में उसे राजकुमार के पास ले आया।

उस नाटे आदमी को देख राजकुमार ने पूछा–"तुम कौन हो? और क्या काम कर सकते हो?"

"मेरा नाम 'चौड़ा' है। मैं चौड़े में बहुत मोटा बन सकता हूँ।" नाटे ने जवाब दिया। ये शब्द कहते गहरी साँस लेकर 'चौड़ा' तेज़ी के साथ मोटा बनने लगा। राजकुमार और 'लंबा' आदमी अगर दूर न भागते तो उसके नीचे गिर कर दब जाते।

"मैं नहीं सोचता कि यह विद्या जानने वाला दुनिया में कोई दूसरा भी हो। इसलिए तुम भी हमारे साथ चलो।" राजकुमार ने कहा। 'चौड़ा' साँस छोड़ कर मामूली आदमी बन गया।

तीनों मैदान को पार कर पहाड़ों के निकट पहुँच रहे थे, तब उन्हें एक और आदमी दिखाई दिया।

"अरे, 'तेज़ आँख' वाला यहीं पर है।" एक साथ 'लंबा' और 'चौड़ा' चिल्ला उठे। राजकुमार ने देखा, तीसरे व्यक्ति की आँखों पर पट्टी बंधी हुई है। राजकुमार ने उससे पूछा–"तुमने अपनी आँखों पर पट्टी बाँध ली है। तुम्हें कैसे रास्ता दिखाई देगा?"

"मुझे सब कुछ साफ़ दिखाई देता है। पट्टी न बांध दूँ तो जहाँ पर भी मेरी दृष्टि पड़ेगी, वह चीज़ जल कर भस्म हो हो जायगी। मेरी आँखें ऐसी तीक्ष्ण हैं।" 'तेज़ आँख' वाले ने समझाया। ये शब्द कहते उसने पट्टी निकाल कर एक पहाड़ी

चट्टान की ओर देखा। वह चट्टान हटात् हज़ार टुकड़े हो गयी। उन टुकड़ों के बीच एक सोने की कनी चमक उठी।

राजकुमार ने 'तेज आँख' वाले को भी अपना नौकर बनाया और उसे आदेश दिया—"तुम अच्छी तरह देख कर यह बता दो कि फ़ौलादी क़िला कितनी दूर है औ वहाँ पर क्या हो रहा है?"

"सूरज के डूबने तक हम फ़ौलादी क़िले में पहुँच जायेंगे। वहाँ पर हमारे लिए रसोई बन रही है। राजकुमारी एक बुर्ज में बंदी है।" 'तेज आँख' ने कहा। उसके कहे मुताबिक़ राजकुमार अपने अनुचरों के साथ पहाड़ों को पार कर सूरज के डूबने तक फ़ौलादी क़िले में पहुँचे। क़िले में से कोई उनके सामने न आया। सब ओर नीरवता छाई हुई थी।

राजकुमार ने क़िले के अहाते में प्रवेश किया। अपने घोड़े को घुड़साल में बाँध कर उसे चारा डाल दिया। इसके बाद चारों ने महल में प्रवेश किया। भीतरी कमरों में कोई न था। मगर एक बड़े कक्ष में शिलाओं के रूप में कई आदमी दिखाई पड़े। उन मूर्तियों पर धूल जमी थी।

भोजनालय में दीप जल रहा था। चारों के लिए भोजन परोसा गया था। चारों ने भोजन कर लेटना चाहा कि इतने में एक कुबड़ा वहाँ पर आ पहुँचा। वह बूढ़ा था। उसके सर पर बाल न थे। मगर दाढ़ी कमर तक बढ़ी थी। वह काला अंगरखा पहने हुए था। उस पर तीन फ़ौलादी पट्टियाँ बंधी थीं। वह एक नारी का हाथ पकड़े ले आया।

राजकुमार ने उस नारी को देखते ही पहचान लिया। वह उसके निकट जाने को हुआ। वह उसी कन्या से विवाह करने के ख्याल से आया था।

राजकुमार को रोकते वृद्ध ने कहा– “मैं जानता हूँ कि तुम कौन हो और किस लिये आये हो? इस कन्या को ले जाने के लिए आये हो। अपनी इच्छा के अनुसार इसे ले जाओ। लेकिन एक शर्त है। तीन रात तुम को इसका पहरा देना पड़ेगा। इसके भागने से रोकना होगा। ऐसा न कर सकोगे, तो तुम और तुम्हारे अनुचर मूर्तियाँ बन जाओगे।” राजकुमार ने बूढ़े की शर्त को मान लिया। वृद्ध राजकुमारी को एक आसन पर बिठा कर चला गया।

राजकुमार ने उस कन्या का परामर्श किया, मगर उसने कोई जवाब न दिया। वह ऐसे निश्चल बैठी थी मानों वह भी मूर्ति बनने जा रही हो। उसे देखने पर राजकुमार को बड़ी दया आयी। उसने उस नारी को वहाँ से ले जाने का मन में निश्चय कर लिया।

उस कन्या के वहाँ से भागने से रोकने के लिए ‘लंबा’ आदमी ने अपना शरीर बढ़ाया और कमरे के चारों तरफ़ बिछाकर लेट गया। ‘चौड़ा’ दर्वाज़े को ढकते अपने शरीर को मोटा बनाकर ऐसे बैठ गया कि मक्खी तक दर्वाज़े में घुस न सके। ‘तेज़ आँख’ वाला कमरे के बीच बैठ गया। राजकुमार रात भर जागरण
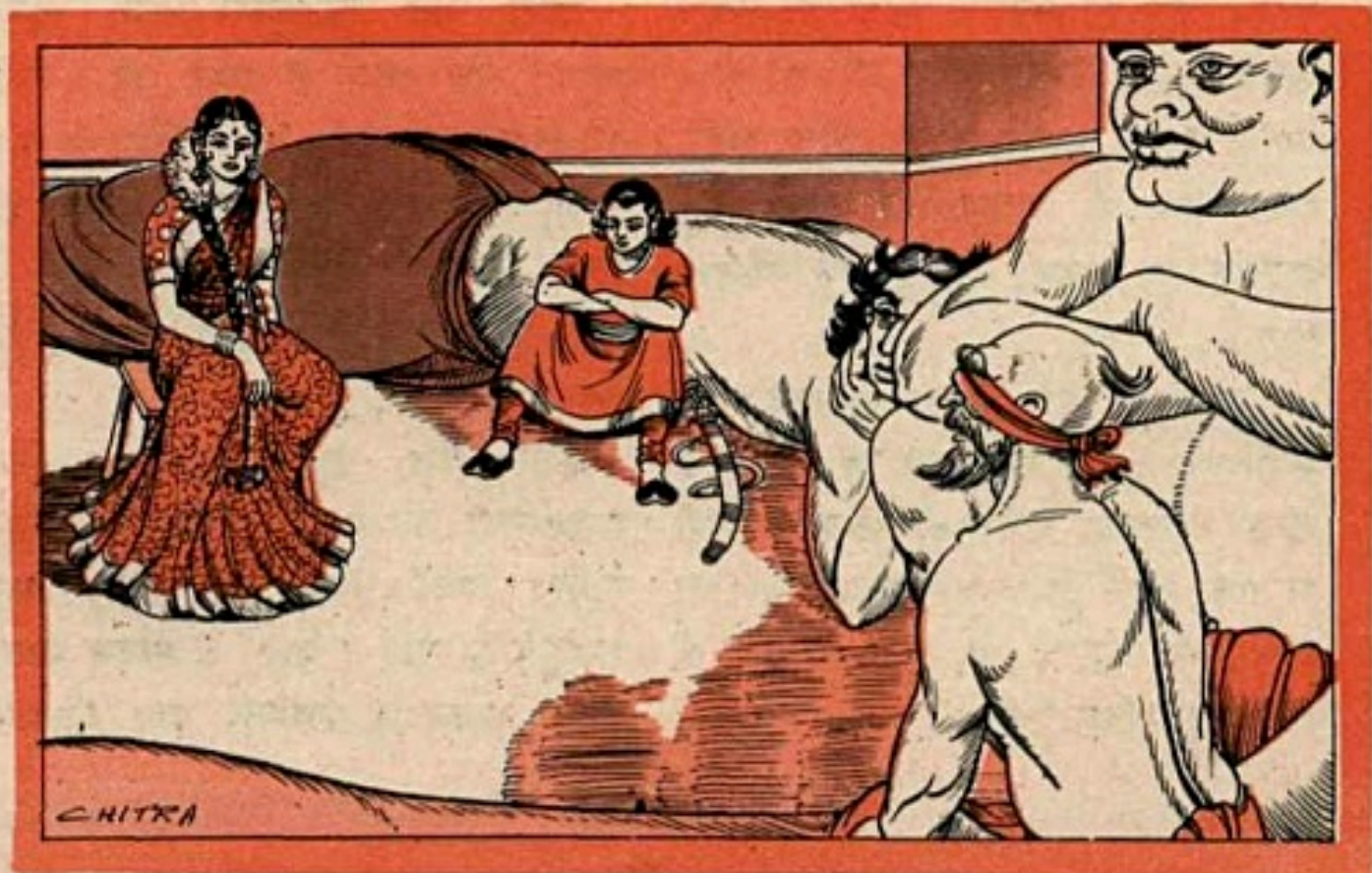
करने का संकल्प कर ज़मीन पर ही बैठ गया। कुछ ही क्षणों में चारों सो गये। जब वे जाग पड़े, तब सवेरा होने को था। सब से पहले राजकुमार की आँख खुली, देखता क्या है, राजकुमारी गायब है। इसलिए वह अपनी मूर्खता पर पछताने लगा।

"सरकार, आप चिंता न करे। मैं अभी उसका पता लगा लेता हूँ।" 'तेज़ आँख' ने बताया। उसे सौ मील की दूरी पर एक जंगल के बीच बरगद की ऊँची डाल पर बरगद के फल के रूप में राजकुमारी दिखाई दी।

'लंबा' आदमी 'तेज़ आँख' वाले को अपने कंधों पर बिठलाकर चल पड़ा। थोड़े ही क्षणों में बरगद के फल के साथ लौट आया। उस फल को ज़मीन पर रखते ही वह राजकुमारी के रूप में बदल गया।

सूर्योदय हो रहा था। बूढ़ा व्यंग्यपूर्ण हँसी के साथ वहाँ आ पहुँचा। राजकुमारी को देखते ही उसकी हँसी गायब हो गयी। उसकी कमर में बंधी तीन फ़ौलादी पट्टियों में से एक टूटकर नीचे गिर पड़ी। राजकुमारी का हाथ पकड़कर बूढ़ा उसे ले गया।

सारा दिन राजकुमार और उसके अनुचर उस प्रदेश में घूमते रहे। उन्हें कई आदमी और घोड़े भी मूर्तियों के रूप में ज़रूर दिखाई दिये, मगर कोई भी प्राणी उनकी नज़र में न पड़ा। उन्हें खाने का तो बढ़िया इंतज़ाम हो चुका था।

दूसरे दिन रात को बूढ़ा फिर राजकुमारी को साथ ले आया और यह कहकर चला गया कि देखें, कहीं राजकुमारी भाग न जाय! न मालूम शायद उनके भोजन में नशीली दवा मिलायी

गयी हो, खाना खाते ही वे अपनी नींद को रोक न पाये। बड़े तड़के उठकर वे लोग देखते क्या हैं, राजकुमारी भाग गयी है।

'तेज़ आँख' ने अपनी पट्टी खोलकर खिड़की में से इधर-उधर देखा। उसने कहा–"यहाँ से दो सौ मील दूर पर एक पहाड़ में एक चट्टान के बीच वह मणि के रूप में है। 'लंबा' मुझे वहाँ पर ले जायगा तो उसको लाया जा सकता है।"

जल्द ही वे दोनों मणि के साथ लौट आये। ज़मीन पर रखते ही मणि राजकुमारी के रूप में बदल गयी। दूसरे क्षण बूढ़े ने कमरे में प्रवेश करके राजकुमारी को देखा। उसकी कमर में बन्धी एक और फौलादी पट्टी टूटकर नीचे गिरी। बूढ़ा बड़बड़ाते राजकुमारी का हाथ पकड़कर उसे खींच ले गया।

तीसरी रात को भी राजकुमार तथा उसके अनुचरों के खाना समाप्त करते ही बूढ़ा राजकुमारी को ले आया। उस कमरे में बिठाकर चला गया।

आज रात को राजकुमार ने जागते रहने की बड़ी कोशिश की, पर फ़ायदा न रहा। उसने सोचा कि पल भर के लिए आँख मूंद ले, मगर आँख खुलते ही पूरब में सूर्योदय होने को था।
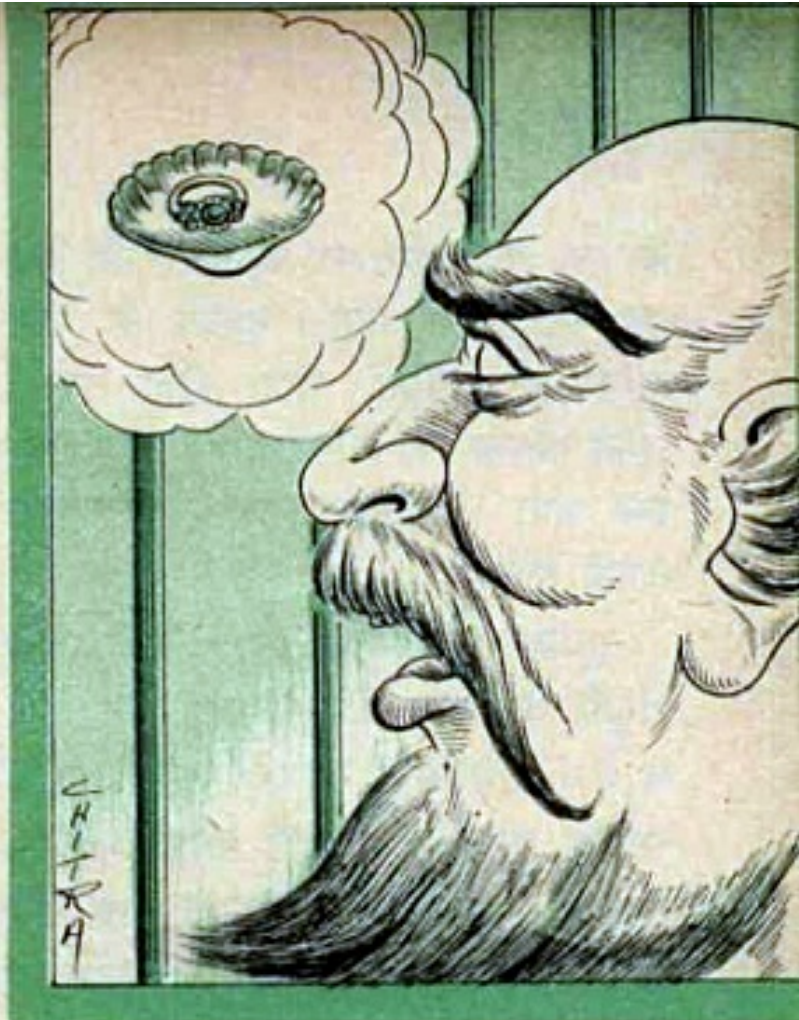
राजकुमारी गायब हो गयी।

राजकुमार ने 'तेज़ आँख' को जगाया। उसने उठकर पट्टी खोल दी, खिड़की में से देखा। "यहाँ से तीन सौ मील की दूरी पर एक तालाब के नीचे सीपी में एक अंगूठी है। वही राजकुमारी है। उसे यहाँ पर ले आना है तो हमारे साथ 'चौड़ा' का चलना भी जरूरी है।" 'तेज़ आँख' ने कहा।

'लंबा' ने इस बार अपनी देह को और लंबाई। 'तेज़ आँख' और 'चौड़ा'

को एक एक कंधे पर बिठाकर बड़े बड़े डग भरते चल पड़ा। तालाब के पास पहुँचते ही 'चौड़ा' मोटा होता गया। उसने तालाब का आधा पानी पी डाला, तब 'लंबा' ने झुककर तालाब के नीचे से अंगूठी निकाली।

सूर्योदय होने को था। अभी तक अंगूठी की खोज में गये हुए लोग लौटे न थे। राजकुमार घबराने लगा। पहाड़ पर से सूरज की किरणें झांकने लगीं। दर्वाज़ा खोलकर बूढ़ा द्वार के पास खड़े हो विकृतरूप से हँस पड़ा। इतने में खिड़की में से अंगूठी भीतर गिर पड़ी। दूसरे ही क्षण राजकुमारी प्रत्यक्ष हुई।

बूढ़ा क्रोध से हाहाकार कर उठा। उसकी कमर पर बंधी तीसरी फौलादी पट्टी भी टूटकर नीचे गिर पड़ी। बूढ़ा एक कौए के रूप में बदल गया। 'काव' 'काव' चिल्लाते खिड़की में से उड़ गया।

राजकुमार ने राजकुमारी की ओर देखा। वह मंदहास कर रही थी। वह अपने हाथ बढ़ाये राजकुमार की ओर चली। अब उसके मुँह से बोल फूटे। उसे विमुक्ति मिल गयी, इसलिए उसने राजकुमार को धन्यवाद दिया।

उसी समय सारे क़िले में कोलाहल मच गया। बूढ़े ने अपने मंत्र-बल से जिन मनुष्यों और घोड़ों को मूर्तियों में बदल दिया था, उन सब में जान आ गयी था। सब ने राजकुमार को घेरकर उसकी तारीफ़ की। उसने उन लोगों से बताया कि यह सब उसके अनुचरों ने ही किया है।

राजकुमार के अनुचर उससे विदा लेकर चले गये। राजकुमार राजकुमारी को साथ ले अपने राज्य को लौटा। राजकुमारी से विवाह कर सुख के साथ अपने दिन बिताने लगा।

विश्वकर्म द्वारा निर्मित इंद्रप्रस्थ नगर को राजधानी बनाकर पांडव न्यायपूर्वक शासन करने लगे। दिन प्रति दिन उनके राज्य की उन्नति होने लगी।

उन दिनों में अचानक एक बार नारदमुनि युधिष्ठिर को देखने आ पहुँचा। युधिष्ठिर ने अपने भाइयों के साथ आगे बढ़कर नारद का स्वागत किया, इसके बाद साष्टांग प्रणाम किया। अंत:पुर से द्रौपदी भी आ पहुँची। नारद को नमस्कार कर खड़ी हो गयी। नारद ने द्रौपदी को आशीर्वाद देकर भेज दिया, तब भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव के सामने युधिष्ठिर से कहा—"आप पांच भाइयों के एक ही पत्नी है। उसकी वजह से आप लोगों में परस्पर शत्रुता का भाव पैदा न हो, तो आप लोगों को कुछ नियमों का पालन करना उचित होगा। वरना ऐसी बातों में निकट व्यक्तियों के बीच में वैर का पैदा होना सहज है।" ये शब्द कहते नारद ने उनको सुंद एवं उपसुंद की कहानी सुनायी।

हिरण्यकश्यप के वंश में निकुंभ नामक एक व्यक्ति था। उसके पुत्र ही सुंद और उपसुंद हैं। वे सदा साथ रहते थे और परस्पर प्रेम करते थे। उनके मन में तीनों लोकों पर विजय पाने की इच्छा पैदा हुई। इसके वास्ते उन्होंने तपस्या के द्वारा शक्ति प्राप्त करने की कामना की। विंध्यपर्वतों के पास एक निर्जन जंगल में घोर तपस्या प्रारंभ की। उस ताप से

१७. अर्जुन की तीर्थयात्राएँ

विंध्यपर्वतों की गुफाओं में अग्नि पैदा हुई और सारे जंगल में धुआँ फैल गया।

उनकी तपस्या देख देवता घबरा गये। उनका तपोभंग करने के ख्याल से उन्होंने सुंद और उपसुंद के सामने ऐसा भ्रम पैदा किया कि उनके समक्ष अपार रत्नों के ढेर एवं नारियाँ उपस्थित हों। फिर भी सुंद और उपसुंद विचलित न हुए। इस पर देवताओं ने उनके सामने एक और भ्रम पैदा किया। जिसके अनुसार सुंद और उपसुंद के सामने उनकी माताओं, पत्नियों तथा पुत्रों को राक्षस सता रहे हों और वे अपनी रक्षा करने के लिए सुंद और उपसुंद से माँग कर रहे हों! इस पर भी सुंद और उपसुंद विचलित न हुए। तब उनके सामने ब्रह्मा ने प्रत्यक्ष होकर उन्हें सब प्रकार की मायाएँ, अस्त्र-शस्त्र, असाधारण बल और पराक्रम, तथा तीनों लोकों को जीतने की शक्ति– वरों के रूप में प्रदान किया। उन भाइयों ने ब्रह्मा से अमरत्व भी माँगा। पर ब्रह्मा ने यह वर देने से इनकार किया, लेकिन यह वरदान दिया कि दूसरों के हाथों से उनकी मृत्यु कभी न होगी। उन लोगों को यह न सूझा कि वे परस्पर एक दूसरे को मार भी सकते हैं। इसलिए यही सोचा कि जब वे

दूसरों के हाथों में मर न सकते तो इसका मतलब है कि उन्हें अमरत्व प्राप्त हो गया है।

इस प्रकार वर पाकर सुंद और उपसुंद ने सेना इकट्ठी की। इंद्रलोक पर हमला करके उसे जीत लिया, फिर पाताल में जाकर उस पर भी क़ब्ज़ा कर लिया। आखिर भूलोक में भीभत्स पैदा करने लगे। इस पर ब्रह्मा ने विश्वकर्म को बुला भेजा, उसके ज़रिये तिलोत्तमा नामक एक त्रिलोकसुंदरी की सृष्टि करायी और सुंद एवं उपसुंद के पास भेजा। तिलोत्तमा एक नदी के तट पर फूल चुन रही थी। उसे देख सुंद एवं उपसुंद उस पर मोहित हो गये। उन दोनों ने उसके दोनों हाथ पकड़कर खींचते अपनी पत्नी बनाने का निश्चय कर तिलोत्तमा से पूछा—"तुम हम दोनों में किसकी पत्नी बनना पसंद करती हो?" इस पर तिलोत्तमा ने उन्हें जवाब दिया—"तुम दोनों में जो ज्यादा बलवान है, मैं उसी की पत्नी बनूंगी।" दोनों में कौन ज्यादा बलवान है, इसका निर्णय करने के लिए दोनों ने परस्पर गदा-युद्ध किया और एक दूसरे को मार डाला।

नारद ने पांडवों को सुंद और उपसुंद का वृत्तांत सुनाकर कहा—"आप लोगों

के बीच में ऐसे वैर भाव के आने से बचने के लिए कोई एक नियम बना लीजिये।"

इस पर पांडवों ने नारद को साक्षी बनाकर एक नियम रखा। उस नियम के अनुसार द्रौपदी एक एक वर्ष एक एक के यहाँ रहेगी। वह जिसके घर में होगी, उस घर में दूसरों को नहीं जाना चाहिए। अगर कोई जाता है तो उसे बारह मास तक ब्रह्मचर्य का पालन करते तीर्थयात्राएँ करनी पड़ेंगी।

पांडवों के इस निर्णय पर नारदमुनि बहुत प्रसन्न हुआ और बोला—"इस नियम

का ठीक से पालन हो, तो आप लोगों के बीच कोई दुश्मनी पैदा नहीं कर सकता है।" ये बातें कहकर नारद वहाँ से चला गया। द्रौपदी नियम के अनुसार एक साल एक पति के घर रहने लगी। समय बीतता गया।

एक दिन एक ब्राह्मण युधिष्ठिर के घर के सामने खड़े हो रोने-चिल्लाने लगा। इसे देख अर्जुन ने उससे पूछा–"क्यों भाई, रोते क्यों हो?"

"मैं आप जैसे धर्मात्माओं की रक्षा में हूँ, फिर भी मेरे होम की गायों को चोर हांक ले गये हैं। मेरे रोने-चिल्लाने पर भी मेरी बिनती को सुननेवाला कोई दिखाई नहीं देता। गायों के न होने से मैं अपने धर्म-कर्मों से वंचित हो गया हूँ। कृपया मुझे उन गायों को वापस दिला दीजिये।" ब्राह्मण ने कहा।

"मैं तुम्हारी गायों को अभी वापस दिला देता हूँ। तुम भी मेरे साथ चलोगे, देखेंगे, चोर किस ओर भाग गये हैं।" ये शब्द कहते अर्जुन धनुष और बाण लेने युधिष्ठिर के घर में चला गया।

लेकिन इसी समय अर्जुन को अपने नियम का स्मरण हो आया। इस वक़्त द्रौपदी युधिष्ठिर के घर रहती है। ऐसी हालत में यदि वह उनके घर में प्रवेश करेगा तो नियम-भंग होगा। अगर धनुष और बाण लाने में विलंब होगा तो कार्य-भंग होगा। अर्जुन ने सोचा कि नियम-भंग होगा तो दण्ड भोगा जा सकता है, लेकिन कार्य-भंग नहीं होने देने चाहिए। यह सोचकर युधिष्ठिर तथा द्रौपदी के एकांत भवन में अर्जुन ने प्रवेश किया। युधिष्ठिर की अनुमति से धनुष और बाण लेकर ब्राह्मण के साथ चला गया। चोरों से लड़कर उनको हराया। गायों को पुनः ब्राह्मण को वापस दिलाया।

अर्जुन ने घर लौटकर बड़ों की प्रशंसाएँ प्राप्त कीं। उन्हें प्रणाम किया। फिर युधिष्ठिर से कहा–"मैंने नियम का उलंघन कर आप तथा द्रौपदी के एकांत भवन में प्रवेश किया है। इसलिए मैं साल भर वनवास और तीर्थयात्राएँ करके लौट आऊँगा। मुझे अनुमति दीजिये।"

इस पर युधिष्ठिर ने दुखी हो कहा–"अर्जुन बड़े लोगों के अपनी पत्नियों के साथ एकांत में रहते समय छोटों के आने से गलती नहीं मानी जाती। अलावा इसके तुम उस ब्राह्मण की जरूरत को ख्याल में रखते आये थे, इससे भलाई ही हुई। इसलिए यह गलती नहीं हो सकती। मेरी बात पर यदि तुमको विश्वास हो तो तीर्थयात्रा करने की बात भूल जाओ।"

अर्जन ने कहा–"अगर कोई गलती करता है तो हम उसे दण्ड देते हैं। ऐसी हालत में हम्हीं गलती करके किसी बहाने उससे बचने का प्रयत्न करना ठीक नहीं है। इसलिए मुझे न रोकियेगा। मैंने तीर्थयात्रा पर जाने का निश्चय कर लिया है।"

युधिष्ठिर को अर्जुन की बात माननी पड़ी। अर्जुन वनवास के लिए योग्य वेष धारणकर घर से निकल पड़ा। उसके साथ अनेक ब्राह्मण तथा पुण्य कथाएँ
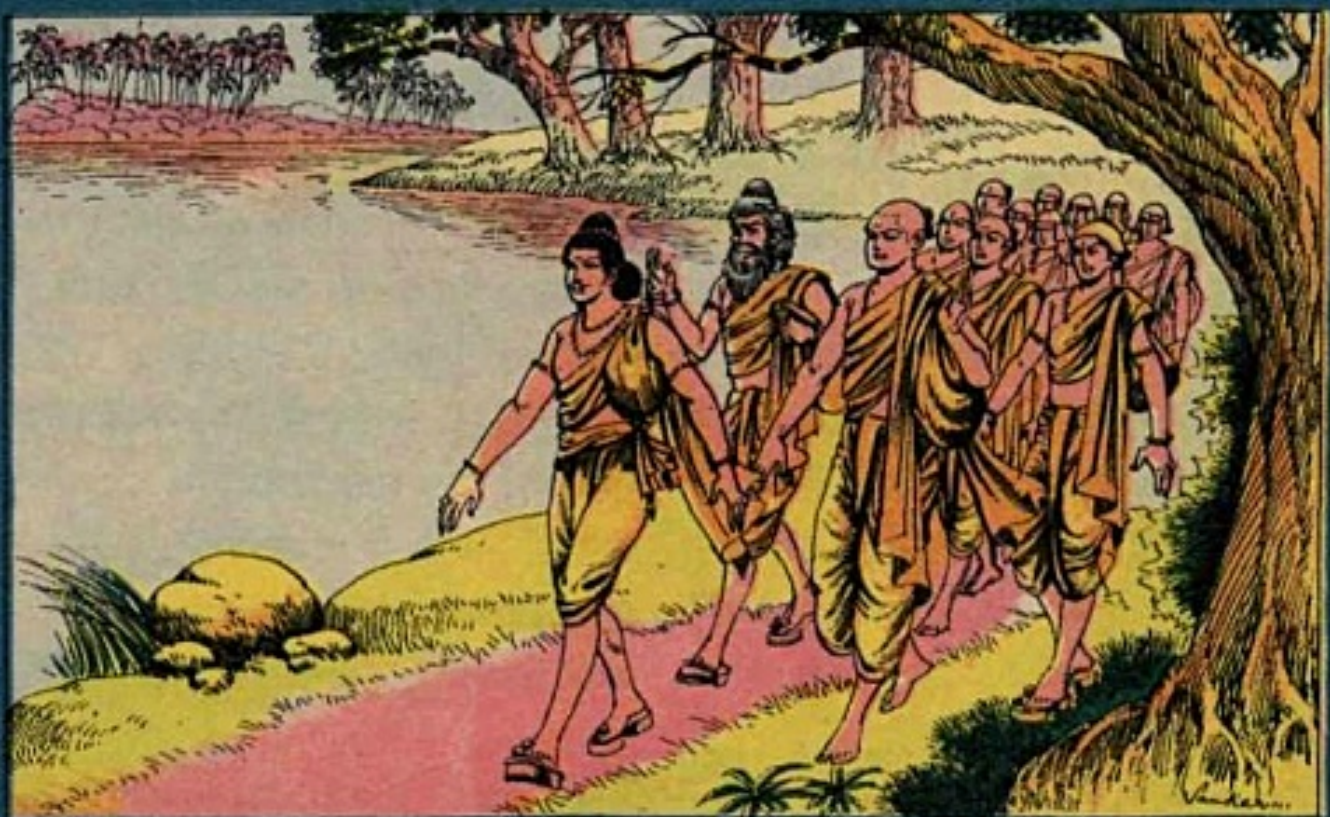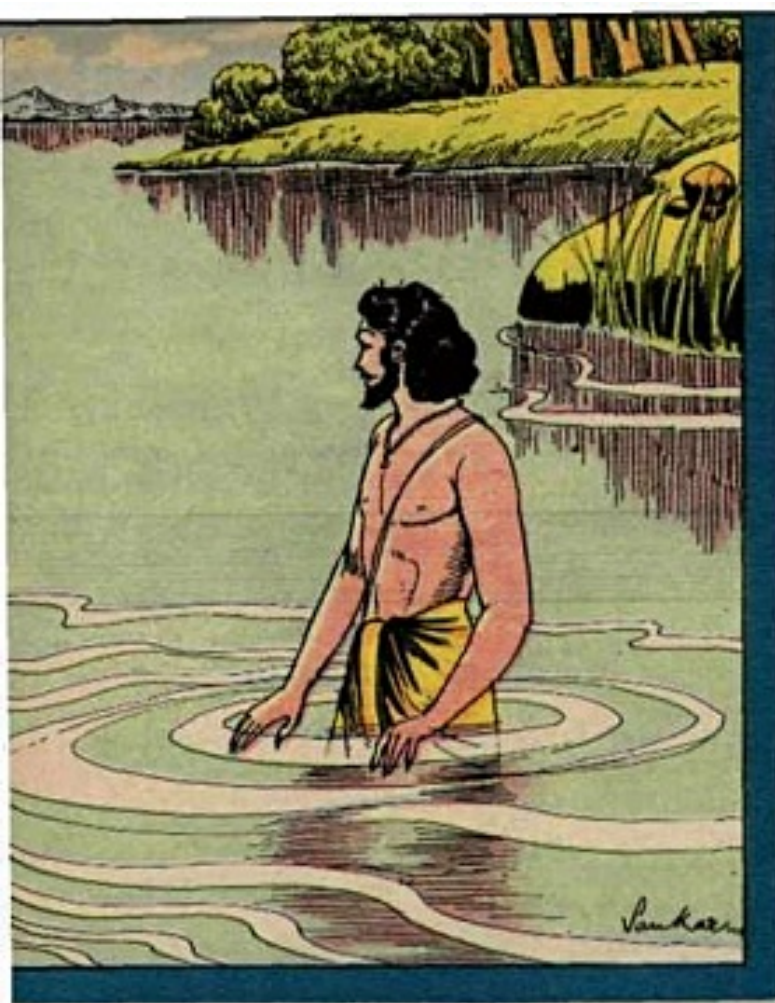
सुनानेवाले पौराणिक भी चल पड़े। उन सबके साथ अर्जुन अनेक नदी, जंगल पार करते तीर्थ का सेवन करते कुछ समय बाद गंगाद्वार जा पहुँचे।

वहाँ पर अनेक मुनि गंगा में स्नान करके अग्नि जलाकर उसमें आहुति दे रहे थे। अर्जुन ने भी स्नान करने का संकल्प किया। तदुपरांत देवतार्पण तथा पितृतर्पण समर्पित करने के विचार से स्नान करने नदी में उतर पड़ा।

उस वक़्त उलूपी नामक नागकन्या अर्जुन के सौंदर्य को देख मोहित हो गयी। जल में ही उसे पकड़कर पानी के भीतर खींच ले गयी और उसे नागलोक में ले जाकर एक सुंदर महल में पहुँचा दिया।

अर्जुन ने उस नागकन्या को देख पूछा– "यह तुमने कैसा साहस किया? तुम कौन हो? किस की पुत्री हो? यह देश कौन-सा है?"

"नाथ, मैं नागों के ऐरावत कुल के कौरव्य नामक नागराज की पुत्री हूँ। मेरा नाम उलूपी है। मन्मथ जैसे तुम्हारे रूप को देख मैं मोहित हो गयी। हमारे नागों की शक्ति के प्रभाव से तुमको यहाँ ले आयी हूँ। मेरी इच्छा की पूर्ति करके मेरे द्वारा संतान प्राप्त करो।" उलूपी ने कहा। (अंतिम पृष्ठ का चित्र)

"उलूपी, सुनो! मैं ने कुछ कारणों से ब्रह्मचर्य व्रत का अवलंबन किया है। तीर्थयात्राएँ करते समय बिता रहा हूँ। मुझ से व्रतभंग कराने की कामना करना अधर्म होगा। मैं पाप का भागी हो जाऊँगा।" अर्जुन ने समझाया।

उलूपी ने अर्जुन से कहा–"द्रौपदी के संबन्ध में आप सब भाइयों ने जो नियम बनाया, उससे मैं परिचित हूँ। फिर भी तुम ब्रह्मचर्य व्रत की बात करोगे तो कोई फ़ायदा न होगा। यदि तुम मेरी

इच्छा की पूर्ति न करोगे, तो मदन-ताप से झुलस कर मैं मर जाऊँगी। वह पाप तुम्हें अवश्य लगेगा। एक व्यक्ति के प्राण बचाने से बढ़कर कोई पुण्य न होगा। इसलिए मुझे अभय प्रदान करो।" ये शब्द कहते उलूपी ने अर्जुन के चरण पकड़े।

अर्जुन ने उलूपी की इच्छा की पूर्ति करने का निश्चय किया। वह रात अर्जुन ने उलूपी के साथ बितायी। दूसरे दिन सवेरे उलूपी ने उसे गंगाद्वार पर पहुँचा दिया। उसने अर्जुन को वर दिया कि उसे किसी भी जलचर के द्वारा कभी कोई हानि न हो, तब वह अपने निवास को लौट गयी। वह अर्जुन के द्वारा गर्भवती हुई और कुछ समय बाद ऐरावंत नामक पुत्र का जन्म दिया।

गंगाद्वार से निकल कर अर्जुन अनेक तीर्थों का सेवन कर के तेरहवें महीने में मणिपुर नामक नगर में पहुँचा। उस नगर का राजा चित्रवाहन था। उसके चित्रांगदा नामक पुत्री थी। उसे देखते ही अर्जुन उस पर मोहित हो गया। अर्जुन ने चित्रवाहन से पूछा कि वह चित्रांगदा के साथ उसका विवाह करे।

इस पर चित्रवाहन ने कहा—"इससे बढ़कर मुझे और क्या चाहिये? लेकिन मेरी एक शर्त है। हमारे वंश में प्रत्येक पीढ़ी में एक ही पुत्र होता आया है। मगर मेरे तो पुत्री ही हुई है। इसलिए इसके द्वारा होनेवाले पुत्र को मैं अपने पुत्र के रूप में पालूंगा। इस पर तुमको कोई आपत्ति न हो तो मैं अपनी पुत्री के साथ तुम्हारा विवाह करूंगा।"

अर्जुन ने चित्रवाहन की शर्त स्वीकार करके चित्रांगदा के साथ विवाह किया। चित्रांगदा के साथ तीन रात बिताकर अपने ब्राह्मण वृंद को साथ ले दक्षिणी समुद्र तट पहुँचा।
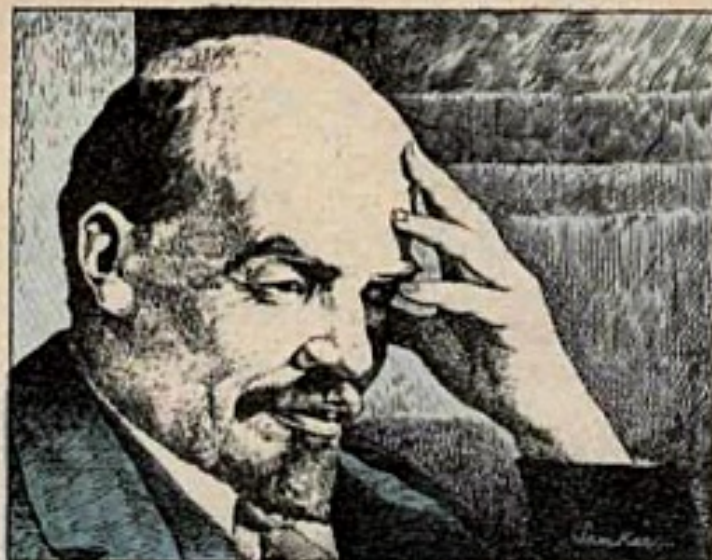
लेनिन की कहानी

[४]

लेनिन के पर्यवेक्षण में १९०० दिसंबर में "इस्क्रा" (अग्निकण) नामक पत्रिका प्रारंभ हुई। रूस की पार्टी की कमिटियों को अधिक चेतनापूर्ण बनाने में इस पत्रिका ने बड़ा योग दिया।

१९०३ में रूसी सामाजिक प्रजातंत्र मजदूर पार्टी की द्वितीय महासभा संपन्न हुई। इस महासभा में जबर्दस्त क्रांतिकारी मार्किस्ट पार्टी का जन्म हुआ। इसके जन्मदाता व नेता लेनिन ही था।

"इस्क्रा" पत्रिका में लेख प्रकाशित करते समय "लेनिन" नाम प्रकाश में आया। आज तक वही नाम उसके लिए सार्थक बना रहा। १९०३ की महासभा में जो मतभेद हुए, उनकी वजह से अल्प संख्या वर्ग व अधिक संख्या वर्ग नाम से दो दल हो हुये। अल्प संख्या वर्ग के लोग "मेन्षिविक" तथा आधिक संख्या वर्ग के लोग "बोल्षिविक" कहलाये। यह बोल्षिविक शब्द विशेष प्रचार में आया।

१९०५ जनवरी में हड़ताल करनेवाले अपनी कठिनाइयों के संबंध में जार सम्राट से निवेदन करने गये तो उन मजदूरों पर गोलियाँ चलायी गयीं। उस वक़्त एक हज़ार लोग मर गये और पाँच हज़ार लोग घायल हुए।

यह घटना जार सम्राट के शासन की आँखें खोलने में सफल साबित हुई। सारे देश में भीभत्स वातावरण पैदा हुआ। मज़दूरों ने क्रांति मचायी, मगर वे असफल हो गये। इस असफल कांति से लेनिन ने अच्छा सबक़ सीखा। ज़ार के गुप्तचर लेनिन का पीछा करने लगे। लेनिन रूस छोड़कर ९ साल विदेशों में बिताने लगे।

१९१४ अगस्त में पहला विश्व महा संग्राम प्रारंभ हुआ। युद्ध के प्रारंभ के समय लेनिन पोलेंड में था। उसने अंदाज़ लगाया कि यह युद्ध क्रांति के फैलने में अनुकूल वातावरण पैदा करेगा।

युद्ध के प्रारंभ होने के दस दिनों में ही पोलेंड की सरकार ने लेनिन पर जासूसी के कार्य करने का आरोप लगा कर उसे गिरफ़्तार किया। लेनिन पर लगाये इस आरोप के कोई आधार न थे और पौलेंड के विकास चाहनेवालों के विरोध करने पर लेनिन मुक्त किया गया।

जेल से रिहा होते ही लेनिन स्विजर्लैण्ड चला गया।

रूस के युद्ध-विरोधियों का लेनिन ने समर्थन किया। लेनिन के प्रयत्नों के कारण ही स्विजर्लैण्ड में अंतरष्ट्रीय सोशलिस्ट महासभा संपन्न हुई। उसमें ११ देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। लेनिन का विचार था कि युद्ध का मारण होम समाप्त होना है तो विश्व के सभी मजदूरों को एक होना है।

लेनिन स्विजर्लैण्ड से रूस जाने को उद्विग्न हो उठा। यह मौक़ा उसको ३ अप्रैल १९१७ की रात को प्राप्त हुआ।

इस समय लेनिन और उसकी पत्नी को अनेक प्रकार की तक़लीफ़ें उठानी पड़ीं।

फिर भी लेनिन अपने राजनैतिक लक्ष्य को भूल न पाया। विदेशों में प्रवास में रहते ही उसने "प्राव्द" (सचाई) नामक पत्रिका १९२२ में शुरू की। यह पत्रिका आज भी चल रही है। यह पत्रिका प्रारंभ में मजदूरों के चंदे के बल पर चली। ज़ार की सरकार उस पत्रिका पर निगरानी रखे हुये थी। उस पत्रिका के एक वर्ष पूरे होने के पहले उस पर ३६ अभियोग लगाये गये। ४१ अंक जब्त किये गये।

उसी रात को वह पेट्रोग्राड़ (आज का लेनिनग्राड़) जा पहुँचा। अपार जनता ने उसका स्वागत किया और कोलाहल के साथ सायुध शकटों पर खड़ा करके उसका जुलूस निकाला।

युद्ध की वजह से देश की हालत बड़ी खराब हो गयी थी। सब तरह से देश का सर्वनाश हो चुका था। अपार जनता का संहार हो चुका था। खाने को अन्न न था। जो बच रहे, वे भूख से तड़प रहे थे। उस हालत में लेनिन ने जानता को बताया कि मजदूर और गरीब कृषक एक होकर अमीरों के हाथों से अधिकार छीन लेने से उन्हें शांति, अन्न और स्वतंत्रता प्राप्त होंगी। उन्होंने यह भी बताया कि वे सब अधिकार सोवियटों के हाथों में आ जायें। (सोवियट का मतलब कृषक, मजदूर एवं सैनिक प्रतिनिधि-वर्गों की संस्थाएँ हैं।)

अपने इस नये सिद्धांत का प्रचार लेनिन प्रति दिन करने लगा। १९१७ जून में अखिल रूस सोवियटों की महासभा हुई। उसमें सभी पार्टियों के प्रतिनिधियों ने भाषण दिये। किसीने उस सभा में कहा कि अधिकार को हस्तगत करनेवाली

क्रांतिकारी पार्टी कोई नहीं है। इस पर लेनिन ने तुरंत उत्तर दिया–"ऐसी पार्टी जरूर है।" पर यह स्पष्ट हो गया कि जो पदों पर हैं, वे असमर्थ हैं। आर्थिक व्यवस्था अस्त-व्यस्त थी। चीजों का दाम नियंत्रण में न था। जनता में असंतोष बढ़ता जा रहा था। मजदूर विशाल प्रदर्शन करने को तैयार हो रहे थे।

जून १८ को पाँच लाख मजदूर एवं सैनिकों ने पेट्रोग्राड की गलियों में प्रदर्शन करते नारे लगाये–"युद्ध बंद हो, शांति फैल जाय! सभी अधिकार सोवियटों के हैं।" जुलाई ३ को एक और जुलूस निकला।

रूसी सरकार लेनिन पर जर्मन-गुप्तचर का इलज़ाम लगाकर उसकी खोज कराने लगी। लेनिन ने अपनी दाढ़ी निकाली, विग धारण किया, कई घर बदलते किसान के वेष में अज्ञातवास करने लगा।

पहली अक्तूबर को लेनिन नें निर्णय किया कि क्रांति या विद्रोह के बिना अधिकार हस्तगत न होगा। क्रांति की तैयारियाँ फैक्टरियों तथा सैनिक-दलों में होने लगीं। स्मोलनी का भवन क्रांति का केन्द्र था। अक्तूबर २४ की रात उस भवन में बड़ा कोलाहल था। भवन के सामने आयुध सामग्री पहुँच गयी थी। उस रात के बीतते-बीतते सवेरा होते ही नीवा नदी के सभी पुल, टेलीफ़ोन के केन्द्र, रेल्वे स्टेशन, बिजली घर, तथा बैंक क्रांतिकारियों के आधीन हो गये।

क्रांतिकाल में ही अखिल रूस सोवियटों की दूसरी महासभा हुई। सोवियट के शासन की पहली डिक्री "शांति" डिक्री थी।

लेनिन के क्रांतिकारी सिद्धांतों के लिए सोवियट रूस प्रत्यक्ष प्रमाण बना। लेकिन उसने असंख्य कठिनाइयों का सामना किया। नये रूप में जन्म लिये रूस को खतम करने के लिए अनेक पाश्चात्य देश एक हुये। इसके बाद गृहयुद्ध हुआ। लेनिन ने विश्व के प्रथम सोशलिस्ट देश की जो नींव डाली, वह अन्यंत दृढ़ है। इसलिए सोवियट रूस सभी खतरों से मुक्त हुआ, बढ़ा और आज अग्रश्रेणी के दो राष्ट्रों में एक माना जाता है।

१९१८ में क्रांति के विरोधियों के हाथों में घायल हो लेनिन अपना स्वास्थ्य खो बैठा। २१ जनवरी १९१८ को सेरिब्रल हिमोरेज बीमारी से लेनिन का देहांत हुआ।

संसार के आश्चर्य:

१०४. पिरेनीज की बर्फ़ी गुफाएँ

फ्रान्स और स्पेन के बीच में स्थित पिरेनीज के पर्वतों में समुद्री तल से ९,००० फुट की ऊँचाई पर अत्यद्भुत बर्फ़ की गुफाएँ हैं। संसार में इतनी ऊँचाई पर अन्यत्न बर्फ़ी गुफाएँ नहीं हैं। इनमें "कमरे" हैं, और उनके बीच सीढ़ियाँ भी हैं। हमेशा तीव्र ठण्ड़ी हवा उन में से होकर बहती रहती है। गीले कपड़े उस हवा में पल भर में जम जाते हैं। भयंकर गर्मी में भी इन गुफाओं की बर्फ़ नहीं गलती। व्यूह की तरह फैले इन गुफाओं में आख़िरी छोर तक टहलना लगभग असंभव है। इस चित्न में दिखाई देनेवाले नोर्बर्ट कास्टेरेट तथा उसकी पुत्नी माड़ है। इन दोनों ने यहाँ पर अन्वेषण कर नयी गुफाओं का पता लगाया है।

Photo by Prasad
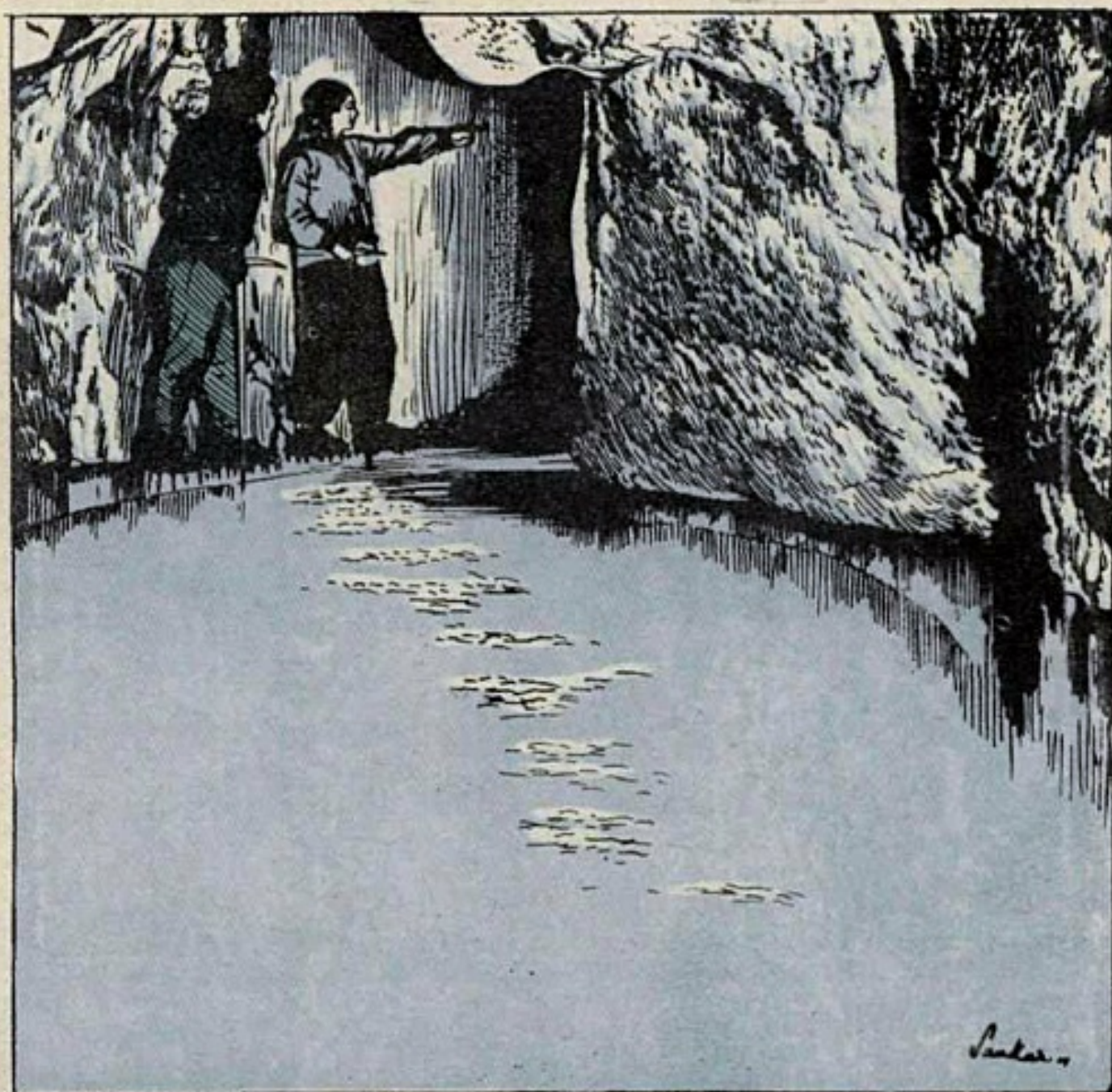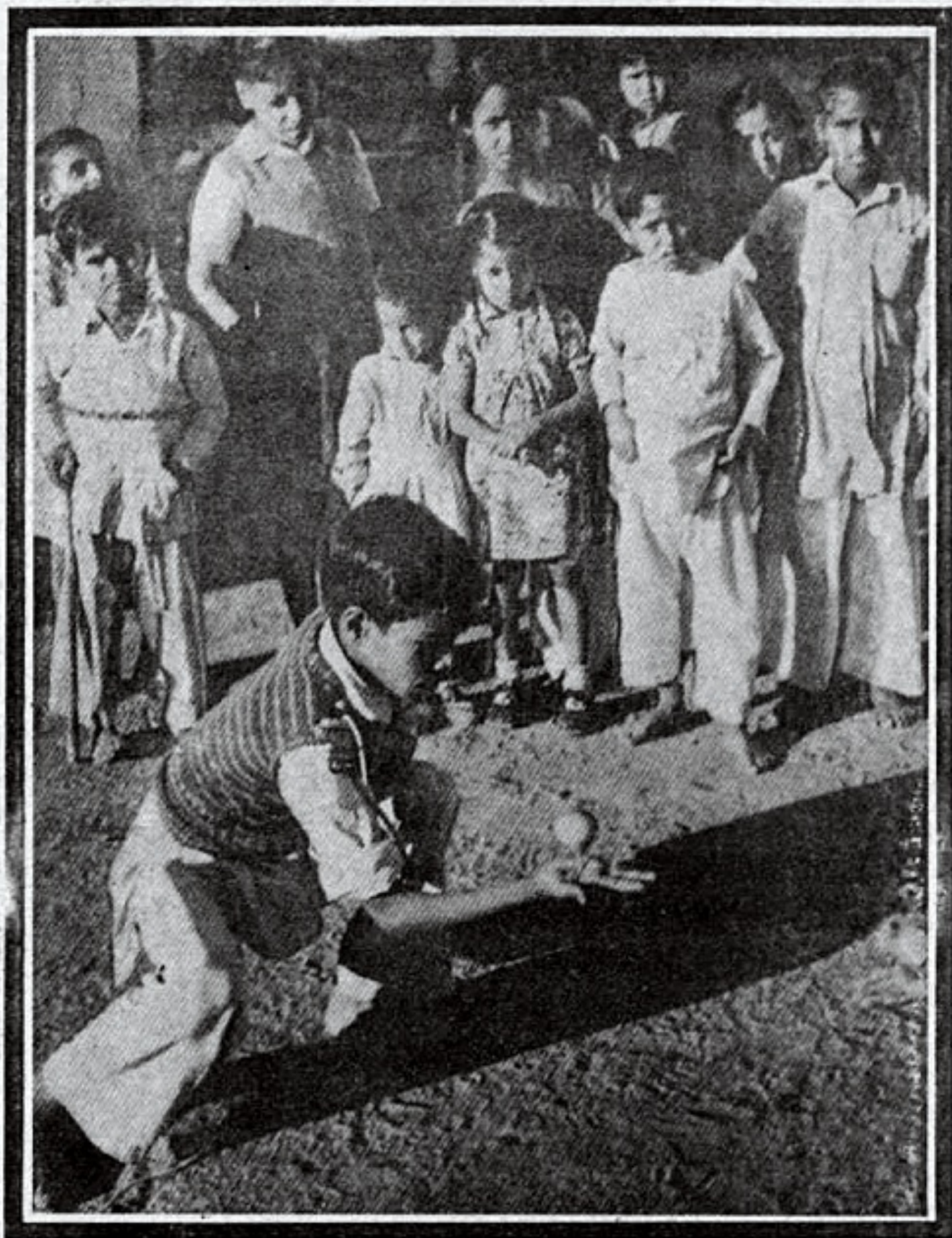
पुरस्कृत परिचयोक्ति

"कहीं यह लट्टू गिर न जाय"

प्रेषिका : कु. अनिता मलिक-कानपुर

Photo by T. S. Satyan

पुरस्कृत परिचयोक्ति

"पांव कहीं थिरक न जाय"

प्रेषिका : कु. अनिता मलिक - कानपुर

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता

अक्तूबर १९७० :: पारितोषिक २०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिये। परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिखकर निम्नलिखित पते पर तारीख़ १० अगस्त १९७० के अन्दर भेजनी चाहिये।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वड़पलनी, मद्रास-२६

अगस्त – प्रतियोगिता – फल

अगस्त के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गयी हैं। इनकी प्रेषिका को २० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो: **कहीं यह लट्टू गिर न जाय**

दूसरा फ़ोटो: **पाँव कहीं खिसक न जाय**

प्रेषिका: **कु. अनिता मलिक,**

द्वारा श्री एन. पी. मलिक, एम. ई. एस. चकेरी पावर हाऊस, कानपुर-८ (उ.प्र.)

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

देगा मज़ा यम् यम् यम्
देखो चबाके चूइंग गम!